पतंजलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार

University of Patanjali, Haridwar

विवरणिका एवं आवेदन पत्र

Prospectus and Application Form

कुलगीत

जयति जय जय, जयति जय जय
पतंजलि विश्वविद्यालय।

आत्मगौरव, राष्ट्रनिष्ठा हेतु जीवन का समर्पण
वेद संस्कृति, धर्म औ अध्यात्म का आदर्श दर्पण
गुरुकुलीय शान्त यह परिवेश संस्कारों का उद्गम
पतंजलि विश्वविद्यालय।

योग, आयुर्वेद शिक्षा, शोध, अनुसंधान, मंथन
भौतिकी, दर्शन, रसायन शास्त्र विद्या का प्रबंधन
देवभाषा से सुशोभित पुर कला, संगीत सरगम
पतंजलि विश्वविद्यालय।

योगमय जीवन, पराक्रम, ध्येय शाश्वत स्वावलंबन
सद्चारित्राचार, सेवा भक्ति भावों का आराधन
यह अहर्निश भोर में नव क्रांति की वेला विहंगम
पतंजलि विश्वविद्यालय।

चिर सनातन ज्ञान औ विज्ञान का आधार नूतन
चरक, सुश्रुत, धन्वन्तरी की साधना का सार नूतन
दिव्य वैश्विक चेतना का केन्द्र पावन तीर्थ संगम
पतंजलि विश्वविद्यालय।

ईश की शुभ प्रेरणा से पल्लवित शिक्षा निकेतन
योगः कर्मसु कौशलम से नित्य गुंजित मनः प्रांगण
जागरण युगचेतना का भूः चतुर्पुरुषार्थ परचम
जागरण युगचेतना, सद्प्रेरणा, पुरुषार्थ परचम
पतंजलि विश्वविद्यालय।

पूज्यश्री ऋषि रामदेव और बालकृष्णाचार्य गुरुवर
अवतरित गुरुवर यशोधर दे रहे आशीष मुनिवर
यह आलौकिक शक्ति, श्रद्धा भावरुपम ज्योतिपीठम
पतंजलि विश्वविद्यालय।

कुलाधिपति का संदेश

भारत सृष्टि के आदिकाल से ही ज्ञान-विज्ञान, साहित्य, संगीत, कला व संस्कृति के क्षेत्रों में विश्व में अग्रणी रहा है।

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः।। -मनु० २। २०

अर्थात् विश्व के सभी देश भारत में आकर ज्ञान-विज्ञान की दीक्षा लिया करते थे तथा भारत को अपने अध्यात्मिक गुरु व मार्गदर्शक के रूप में स्वीकार करते थे। १८वीं शताब्दी तक भारत शैक्षणिक, आर्थिक, सामाजिक व अध्यात्मिक दृष्टि से विश्व के आदर्श देशों की श्रेणी में रहा है। १८वीं शताब्दी में विश्व बाजार में हमारी ३३% सहभागिता थी तथा विश्व की कुल आय में हमारी सहभागिता २७% थी। देश में साक्षरता की दर ९७% थी। प्रसिद्ध जर्मन विद्वान मैक्समूलर, अंग्रेज विद्वान जी. डब्ल्यु. लिटनेर एवं तात्कालिक ब्रिटिश सरकार के दस्तावेजों के अनुसार प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर के लगभग ७ लाख ३२ हजार गुरुकुल थे। इसके साथ-साथ १४ हजार से अधिक उच्च शिक्षा के केन्द्र थे, जिनमें गणित, नक्षत्र विज्ञान, नक्षत्र भौतिकी, भौतिकी, रसायन, भूगर्भ विज्ञान, धातु विज्ञान, दर्शन शास्त्र, शल्य चिकित्सा व चिकित्सा विज्ञान से लेकर विज्ञान, तकनीकी व प्रबन्ध आदि से संबंधित कम से कम १८ विषय पढ़ाये जाते थे। अंग्रेजों ने भारत को सदियों तक गुलाम बनाने के षड्यन्त्र के तहत हमारी सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था को नष्ट कर हमारी समृद्ध व गौरवशाली ज्ञानपरम्परा को खण्डित करने का घृणित प्रयास किया। आज देश में हमारे पास लगभग ४९० विश्वविद्यालय, १३ लाख प्राथमिक व माध्यमिक विद्यालय तथा लगभग १९ हजार महाविद्यालय है। विज्ञान, प्रबन्धन व तकनीकी की शिक्षा देने वाले अनेक विश्व प्रसिद्ध शिक्षण संस्थान हैं, परन्तु फिर भी हम अपने शिक्षा संस्थानों में अपने संस्कारों व संस्कृति को पूरी तरह समाविष्ट नहीं करा पा रहे हैं। हम पतंजलि विश्वविद्यालय के माध्यम से उन्नत शिक्षा के साथ-साथ भारतीय संस्कृति, संस्कार, इतिहास, योग, ध्यान, संयम व सदाचार को शिक्षा का अभिन्न अंग बनाना चाहते हैं। हम शिक्षा का भारतीयकरण या स्वदेशीकरण करना चाहते हैं। हम बच्चों में छुपे महामानव को जागृत कर शिक्षा व संस्कारों से उसका पूर्ण विकास कर, उसे दुनिया का एक सफलतम श्रेष्ठ आदर्श इंसान बनाना चाहते हैं। हमारे संस्थान के स्नातक गुरु-आश्रम से जाकर किसी अन्य की दया के पात्र या आश्रित होकर रोजगार की तलाश में न भटकें अपितु वे स्वयं रोजगार सृजित करके अन्यों को स्वास्थ्य, स्वावलम्बन व रोजगार दें, ऐसी श्रेष्ठ वैदिक ऋषि संस्कृति की गुरुकुलीय परम्परा की प्रतिष्ठापना का एक उच्च आदर्श पतंजलि विश्वविद्यालय के माध्यम से प्रस्तुत करना चाहते हैं।

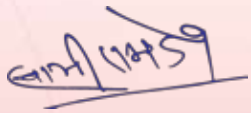

कुलपति का संदेश

शिक्षा एवं संस्कारों का नित्यप्रति हो रहा अवमूल्यन किसी भी सभ्य समाज के लिए शुभ नहीं कहा जा सकता। गिरते हुए शिक्षा व संस्कारों के स्तर को उन्नत बनाकर हम शिक्षा के क्षेत्र में एक अभिनव क्रान्ति लाना चाहते हैं। हम पढ़े लिखे सभ्य बेरोजगारों की संख्या में अभिवृद्धि न करके ऐसे युवक व युवतियों को तैयार करना चाहते हैं, जो शिक्षा के साथ-साथ समाज एवं राष्ट्र में एक अभिनव क्रान्ति लेकर आएं एवं राष्ट्र के विकास में अपना महत्त्वपूर्ण सहयोग दें। हम बीमारियों की बेड़ियों में जकड़े राष्ट्र को स्वास्थ्य के क्षेत्र में स्वावलम्बी बनाकर बीमारियों के उपचार के नाम पर हो रहे अत्याचार व लूट से देश के लोगों को बचाकर, उनको सम्पूर्ण आरोग्य देकर, उनकी स्वास्थ्य रक्षा के साथ-साथ स्वास्थ्य सेवाओं के नाम पर खर्च हो रहे लाखों-करोड़ों रुपयों की आर्थिक बर्बादी को भी रोकना चाहते हैं। योग, आयुर्वेद हमारी सस्ती, सरल, सहज, शाश्वत, वैज्ञानिक, निर्दोष व सम्पूर्ण चिकित्सा विधाएं हैं, हम योग व आयुर्वेद को राष्ट्रीय चिकित्सा पद्धति के रूप में प्रतिष्ठापित करना चाहते हैं और इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए हम योग व आयुर्वेद के श्रेष्ठ विद्वान आचार्यों का निर्माण अपने पतंजलि विश्वविद्यालय में करना चाहते हैं। पतंजलि विश्वविद्यालय के माध्यम से हम शिक्षा व स्वास्थ्य के क्षेत्र में एक नूतन क्रान्ति कर, एक नए युग का निर्माण करना चाहते हैं। हम ऐसे स्नातक तैयार करना चाहते हैं, जो स्वयं तो जीवन में आत्मनिर्भर बनें ही, साथ में अन्यों के लिए भी स्वास्थ्य के क्षेत्र में रोजगार व स्वावलम्बन की नई संभावनाएं पैदा करें और देश की बीमारी, बेरोजगारी, गरीबी, भूख व अभाव को दूर कर एक स्वस्थ, समर्थ, समृद्ध व संस्कारवान भारत बनाने की दिशा में अपना महत्वपूर्ण योगदान दें। यह विश्वविद्यालय योग, स्वास्थ्य, संस्कृति, पर्यटन, विज्ञान, प्रौद्योगिकी तथा पंचकर्म आदि के क्षेत्र में विश्व में अग्रणी संस्था बनेगा, ऐसा हमारा संकल्प है। विश्वविद्यालय का पाठ्यक्रम योग की वैज्ञानिकता के साथ आयुर्वेद, प्राकृतिक चिकित्सा एवं अन्य परम्परागत चिकित्सा पद्धतियों के समन्वय से एक संयुक्त चिकित्सा पद्धति को विकसित कर छात्र-छात्राओं को पूर्णतः आत्मनिर्भर बनाएगा, ऐसी हम आशा करते हैं। ज्ञान विज्ञान, कला व अपराविद्याओं की हमारी समृद्ध शाश्वत वैदिक परम्परा रही है। विश्वविद्यालय में हमने प्रथम योग व आयुर्वेद पर आधारित पाठ्यक्रम तैयार कर डिप्लोमा व डिग्री देने की व्यवस्था की है। कालान्तर में आवश्यकतानुसार नए पाठ्यक्रम सम्मिलित करने हेतु हमारे द्वार खुले हुए हैं। अंत में विद्यार्थियों के उज्जवल भविष्य हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

आचार्य बालकृष्ण

योगऋषि स्वामी रामदेवजी महाराज

वीरों जैसा शौर्य व पराक्रम, सिद्धों जैसा तप, ऋषियों जैसा तत्वज्ञान, आत्मज्ञान, संतों जैसी सरलता, योगियों जैसी स्थिरप्रज्ञता व अनासक्ति, बच्चों जैसी मुस्कान, माँ जैसी कोमलता व वात्सल्य, पिता जैसी कठोरता, वैज्ञानिक जैसी तार्किक व सात्विक बुद्धि वाले गुरुकुलीय परम्परा के विद्वान आचार्य, विनम्र-साधक, परम-तपस्वी, कर्मयोगी-संन्यासी, पूज्यपाद योगऋषि स्वामी रामदेव जी महाराज विश्व के मंगल अनुष्ठान में अहर्निश संलग्न हैं। धरती सा धैर्य, अग्नि सा तेज, वायु सा वेग, जल जैसी शीतलता व आकाश जैसी विराटता आपके जीवन का आदर्श है। गुरु सत्ता व भगवत् सत्ता को सर्वोच्च मानकर पूर्ण समर्पण, सामर्थ्य, पुरुषार्थ एवं समग्र पराक्रम (आक्रामकता) के साथ स्वधर्म, स्वकर्तव्य-कर्म का निर्वहन करते हुए साधना एवं राष्ट्र पुरुष की आराधना करना ही आपके जीवन का ध्येय है। जीवन में प्राप्त होने वाला ज्ञान, समृद्धि, सफलता, सिद्धि, साम्राज्य, वैभव, यश आदि सम्पूर्ण विरासत को गुरु एवं भगवत् कृपा का प्रसाद मानकर सदा विनम्र निरभिमानी रहना, यही आपश्री का कार्यदर्शन है। योग को घर-घर तक पहुँचाने व वैश्विक पटल पर विराट रूप में प्रतिष्ठापित करने का श्रेय आपश्री को जाता है। भारत स्वाभिमान के माध्यम से योग व आरोग्य, चरित्र एवं नेतृत्व निर्माण के विराट आंदोलन के आप मुख्य संचालक हैं। पूज्य योगऋषि स्वामी रामदेव जी महाराज दिव्य योग मंदिर (ट्रस्ट), पतंजलि योगपीठ (ट्रस्ट) व भारत स्वाभिमान (ट्रस्ट) के संस्थापक अध्यक्ष हैं।

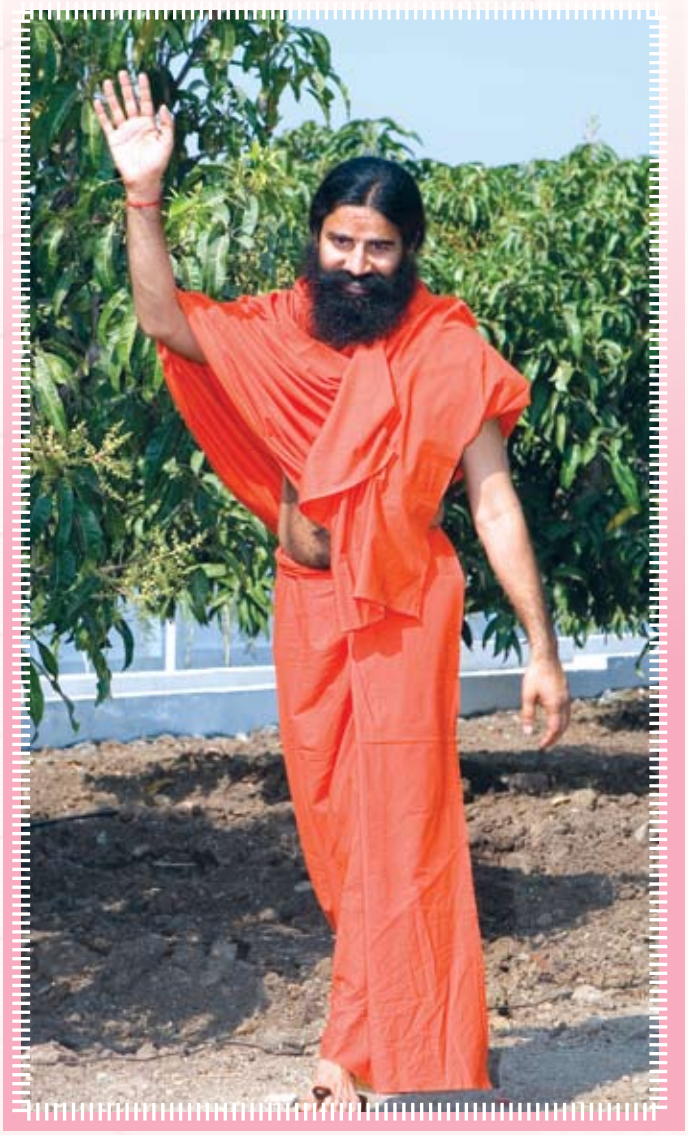

स्वामी जी महाराज के कार्यों को व्यापक स्वीकारोक्ति/ सम्मान

- जून 2007 में संयुक्त राष्ट्र महासचिव के निमंत्रण पर न्यूयॉर्क से 'स्टैण्ड अप कार्यक्रम' के तहत विश्व की जनता से स्वामी जी ने 'गरीबी हटाओ' का आह्वान किया।
- न्यूयॉर्क स्थित नासु काउण्टी द्वारा योगऋषि स्वामी रामदेव जी महाराज का सम्मान तथा 30 जून 2007 का दिन नासु काउण्टी में 'स्वामी रामदेव दिवस' के रूप में मनाया गया।
- न्यू जर्सी की सीनेट व जनरल असेम्बली द्वारा स्वामी जी का सम्मान किया गया।

- ब्रिटिश संसद के 'हाउस ऑफ कॉमन्स' में स्वामी जी का सम्मान किया गया।
- के.आई.आई.टी. भुवनेश्वर द्वारा स्वामी जी को डाक्टरेट की मानद उपाधि प्रदान की गयी।
- बेरहामपुर विश्वविद्यालय द्वारा स्वामी जी को डाक्टरेट की मानद उपाधि प्रदान की गयी।
- इंडिया टुडे पत्रिका द्वारा लगातार दो वर्षों से तथा देश की अन्य शीर्ष पत्रिकाओं द्वारा श्रद्धेय स्वामी जी को देश के सबसे ऊँचे, असरदार, शक्तिशाली व प्रभावशाली पचास लोगों की सूची में सम्मिलित किया गया।
- एसोचैम द्वारा स्वामी जी महाराज को 'ग्लोबल नॉलेज मिलेनियम ऑनर' सम्मान सहित देश विदेशों में सैकड़ों संस्थाओं व सरकारों द्वारा प्रतिष्ठित सम्मानों से सम्मानित किया गया।
- ग्राफिक एरा विश्वविद्यालय द्वारा स्वामी जी महाराज को डाक्टरेट की मानद उपाधि प्रदान की गयी।
- राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, तिरुपति, आन्ध्रप्रदेश द्वारा स्वामी जी को महामहोपाध्याय की उपाधि प्रदान की गयी।
- डी.वाई. पाटिल विद्यापीठ, पुणे द्वारा स्वामी जी को डाक्टरेट की मानद उपाधि प्रदान की गयी।

वैद्यराज आचार्य बालकृष्ण

बाल्यकाल से गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति में शिक्षित व दीक्षित, महान कर्मयोगी, श्रेष्ठ आचार्य बालकृष्ण जी महाराज बहुआयामी व्यक्तित्व व अद्‌भुत प्रतिभा के धनी हैं। आपश्री पूज्य योगऋषि स्वामी रामदेवजी महाराज के स्वप्नों व संकल्पों तथा पतंजलि योगपीठ के सम्पूर्ण अनुष्ठान को मूर्त रूप देने वाले महान सृष्टा व शिल्पी हैं। गुरुकुलीय परम्परा में दीक्षित होने के बावजूद श्रद्धेय आचार्यश्री के प्रबन्धकीय, प्रशासनिक और अभियांत्रिकी सम्बन्धी ज्ञान व अनुभव के सामने देश-विदेश के विभिन्न क्षेत्रों के शीर्ष व्यक्तित्व भी नतमस्तक होकर आपसे कुछ सीखने के उत्सुक रहते हैं। आप महर्षि चरक, सुश्रुत, धनवन्तरि आदि ऋषियों द्वारा प्रतिष्ठापित आयुर्वेद की शाश्वत परम्परा के प्रखर संरक्षक व सबल पोषक हैं। वर्तमान में आयुर्वेद को विश्व पटल पर वैज्ञानिक प्रमाणों के साथ सर्वाधिक प्रचारित व प्रतिष्ठापित करने का गौरव आचार्यश्री को जाता है। श्रद्धेय आचार्य बालकृष्ण जी ने विभिन्न रोगों से ग्रसित 5 लाख से अधिक रोगियों की प्रत्यक्ष चिकित्सा की है। आपके मार्गदर्शन में लगभग 1 हजार वैद्य देश-विदेश में अपनी सेवाएं दे रहे हैं तथा संस्था की समस्त गतिवधियों व प्रकल्पों का कुशल प्रबन्धन आपश्री के निर्देशन में होता है। आप दिव्य योग मंदिर (ट्रस्ट), पतंजलि योगपीठ (ट्रस्ट), भारत स्वाभिमान (ट्रस्ट) के महामंत्री दिव्य फार्मेसी, दिव्य प्रकाशन, दिव्य योग साधना के चेयरमैन, योग सन्देश के मुख्य सम्पादक, पतंजलि आयुर्वेद लिमिटेड तथा पतंजलि फूड एवं हर्बल पार्क के मुख्य प्रबन्ध निदेशक हैं।

पतंजलि विश्वविद्यालय के उद्देश्य

जिन उद्देश्यों के लिए पतंजलि विश्वविद्यालय की स्थापना की गयी है वे निम्नलिखित हैं:

1. प्राचीन ऋषियों-महर्षियों द्वारा निर्दिष्ट मौलिक तत्वज्ञान को आधुनिक वैज्ञानिक प्ररिप्रेक्ष्य में व्यापक अध्ययन-शिक्षण एवं गहन शोध के लिए सुव्यवस्थित तथा विश्वस्तर का शिक्षण स्थापित करना।
2. राष्ट्रधर्म, स्वदेश प्रेम, स्वदेशी खानपान, आहार-शुचिता, जडी-बूटी तथा आयुर्वेद के संरक्षण एवं संवर्धन के विषय में युवाओं को जागृत करके रोजगार परक शिक्षा उपलब्ध कराना।
3. योग, आयुर्वेद सहित वेद वेदांग आदि सभी प्राचीन विधाओं पर आधारित स्नातक तथा स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम प्रदान करना। इसके साथ ही विश्वविद्यालय के उद्देश्य की पूर्ति के लिए कम अवधि के पाठ्यक्रम तथा डिप्लोमा और प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम प्रारम्भ करना।
4. भारतीय संस्कृति, योग तथा आयुर्वेद के क्षेत्र में अनुसंधान तथा नवीन परिवर्तनों को प्रोत्साहित करने के लिये शोध केन्द्र तथा विकास केन्द्र स्थापित करना तथा उनके द्वारा:
   (i) ज्ञान की ऐसी सम्बन्धित शाखाओं में शिक्षण एवं प्रशिक्षण की व्यवस्था करना, जिन्हे वह आवश्यक समझें।
   (ii) विद्यालयों में ज्ञान के प्रचार के लिये शोध कार्य की व्यवस्था करना जिससे विश्व पटल पर उन विधाओं (शोध कार्य) को स्थापित किया जा सके तथा छात्र/छात्राओं को रोजगार भी सहज उपलब्ध हो सके।
   (iii) योग, आयुर्वेद सम्बन्धी अध्ययन और ऐसी अन्य गतिविधियां प्रारम्भ करना जिससे सामान्य जन को योग और आयुर्वेद का लाभ मिल सके जिससे रोग मुक्त, स्वस्थ एवं समृद्ध समाज का निर्माण हो सके और राष्ट्र की सोच को विकसित किया जा सके।

योग व आयुर्वेद-परक ज्ञान पर हमारी मुख्य कार्ययोजना

(क) वर्तमान समय में बढ़ते हुए प्रदूषण, तनाव, अस्त-व्यस्त जीवन शैली व शारीरिक श्रम के अभाव से करोड़ों देशवासी व विश्व समुदाय के लोग एक गहरे स्वास्थ्य संकट से गुजर रहे हैं। जीवन के मूल स्रोत-आहार, वायु व पानी अत्यधिक जहरीले हो गए हैं। अत: कैंसर, टीबी, दया, एलर्जी, मोटापा, मधुमेह, हृदयरोग व उच्च रक्तचाप आदि खतरनाक रोगों से करोड़ों लोगों के लिए जीवन का संकट उपस्थित हो गया है। सब प्रकार की उपचार पद्धतियां, आंशिक रूप से ही लोगों के उपचार में सफल हो पायी हैं। अत: हम पूरे विश्व को चिकित्सा का एक सस्ता, सरल, सहज, वैज्ञानिक व प्रभावशाली विकल्प देना चाहते हैं और वह है योग व आयुर्वेद। योग व आयुर्वेद की शिक्षा पर आधारित उच्चस्तरीय पाठ्यक्रम तैयार करके ऐसी प्रतिभाएं देश व विश्व समुदाय को देना जो दुनिया को स्वास्थ्य व संस्कारों के संकट से बाहर कर एक स्वस्थ, समृद्ध, संस्कारवान व सुखी विश्व का निर्माण कर सकें।

(ख) योग व आयुर्वेद आधारित सर्टिफिकेट, डिप्लोमा, स्नातक डिग्री, स्नातकोत्तर डिग्री व उच्चतम आधुनिक वैज्ञानिक अनुसंधान की सुविधाएं उपलब्ध कराना।

(ग) योग व आयुर्वेद परक प्राचीन ऋषि परम्परा से प्राप्त ज्ञान की शिक्षा तो हम अपने विद्यार्थियों को देंगे ही, साथ ही उनको आधुनिकतम विज्ञान की अनुसंधानशालाओं में वैदिकज्ञान को विज्ञान के आलोक में परखकर उसकी प्रामाणिकता व वैज्ञानिकता के प्रति विश्वस्त करके एक नई चिकित्सा व्यवस्था की प्रतिष्ठापना के लिए तैयार करेंगे।

(घ) हमारे विद्यार्थियों को रोजगार के लिए भटकना नहीं पड़ेगा। प्रथम तो उनके अध्ययनकाल में देश व दुनिया में श्रेष्ठ

शिक्षा व स्वास्थ्य संस्थानों में उनकी नियुक्ति के लिए हम एक राष्ट्र व विश्वव्यापी कार्ययोजना तैयार करेंगे; दूसरा हमारे विद्यार्थी स्वयं में एक संस्थान होंगे। योग व आयुर्वेद को राष्ट्रीय चिकित्सा पद्धति के रूप में प्रतिष्ठापित करने हेतु एक व्यापक कार्ययोजना व संकल्पना के लिए काम करेंगे। इसके लिए उनके सामने कई विकल्प खुले होंगे।

(ङ) हमारे स्नातकों के भविष्य को लेकर हमारी कार्ययोजनाएं:

(i) देश व विश्व की शिक्षा व स्वास्थ्य संस्थाओं में नौकरियों के लिए एक बहुत बड़ा स्वरूप तैयार करना।

(ii) पतंजलि योगपीठ द्वारा संचालित पतंजलि चिकित्सालयों में पंचकर्म, षट्कर्म व आयुर्वेद की सेवाओं का व्यापक विस्तार करके उनमें वैद्यों व योगाचार्यों की नियुक्तियां करना।

(iii) हम अपने विद्यार्थियों को इस प्रकार शिक्षित व दीक्षित करेंगे कि वे दूसरों के द्वारा सृजित रोजगारों में आजीविका कमाने की बजाय स्वयं योग व आयुर्वेद के क्षेत्र में स्वास्थ्य सेवाओं के नए संस्थान या केन्द्र खोलकर अपने साथ दूसरों के लिए भी रोजगार के नए अवसर पैदा करेंगे और इस प्रक्रिया में पतंजलि योगपीठ उनको स्वावलम्बी बनाने में सहयोग करेगा। हमारे सामने रोजगार कोई बड़ा प्रश्न नहीं है। हमारे सामने चुनौती है देश के करोड़ों लोगों को अच्छा स्वास्थ्य उपलब्ध कराना। हम अपने विद्यार्थियों के लिए स्वावलम्बन के साथ-साथ देश को स्वास्थ्य के क्षेत्र में स्वावलम्बी या आत्मनिर्भर बनायेंगे और करोड़ों देशवासियों को आरोग्य का एक श्रेष्ठतम विकल्प उपलब्ध करायेंगे।

पतंजलि विश्वविद्यालय की विशेषताएं

- पतंजलि विश्वविद्यालय ऋषि-मुनियों एवं साधकों की तपस्थली तथा सभ्यता व संस्कृति की उद्गमस्थली हरिद्वार की पुण्य भूमि पर शहर के प्रदूषण एवं कोलाहल से मुक्त प्रकृति की गोद में अवस्थित है। यहां रहकर छात्र/छात्राएं सौहार्दयुक्त परिवेश में अपना सर्वांगीण विकास कर सकते हैं।
- इस समय विश्वविद्यालय में मुख्य रूप से योग व आयुर्वेद की शिक्षा की व्यवस्था है। यहाँ शिक्षा के साथ-साथ योग साधना, संयम, सदाचार, शाकाहार, संस्कृति, तथा संस्कारों पर विशेष ध्यान दिया जाता है।
- आयुर्वेद में अध्ययनरत छात्र/छात्राओं की पृष्ठभूमि विज्ञान की होती है जबकि आयुर्वेद में चरक, सुश्रुत, धनवन्तरि तथा आयुर्वेद के अन्य ग्रन्थों का ज्ञान एवं परम्परा संस्कृत भाषा में है। इन ग्रन्थों को तब तक नहीं समझा जा सकता जब तक छात्र-छात्राओं को संस्कृत भाषा का ज्ञान न हो। पतंजलि विश्वविद्यालय में अध्यननरत छात्र-छात्राओं को संस्कृत के अध्यापन की विशेष व्यवस्था की गयी है।
- विश्वविद्यालय के प्राध्यापक व व्यवस्थापक योग्य, कार्य-कुशल, निर्व्यसनी, समाज, राष्ट्र, संस्कृति व मानवता के प्रति समर्पित है।
- विश्वविद्यालय में 15 राज्यों के छात्र/छात्राएं अध्ययनरत हैं। वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना के अनुरूप छात्र/छात्राओं का संरक्षण तथा संवर्धन जाति (वर्ग), भाषा, प्रान्त, मत आदि के भेदभाव के बिना किया जाता है। छात्र/छात्राओं में परस्पर सहयोग, सामञ्जस्य, शिष्टाचार आदि मानवीय गुणों का विकास किया जाता है।
- छात्र/छात्राओं में अपनी सभ्यता, संस्कृति, राष्ट्र व मानवता के प्रति निष्ठा तथा कर्तव्यबोध विकसित करने का प्रयास किया जाता है।
- विश्वविद्यालय में गुरुकुलीय परम्परा के अनुरूप शिक्षक तथा विद्यार्थियों में गुरु शिष्य के पवित्र तथा आत्मीय संबंध विकसित करने का प्रयत्न किया जाता है। शिक्षक छात्र/छात्राओं को मात-पिता तुल्य स्नेह देते हुए उनके कल्याण के लिये सर्वदा प्रयत्नशील रहते हैं। छात्र/ छात्राएं भी शिक्षकों को पूरा सम्मान देते है।

- छात्र/ छात्राओं में सेवा-भाव, कार्य-कुशलता, कर्मठता और स्वावलम्बन आदि गुणों के विकास के लिए सेवा-प्रकल्पों की व्यवस्था की गयी है। इसमें छात्र/छात्राओं द्वारा सफाई, बागबानी, आस-पास के क्षेत्र में जाकर शिविर आयोजन के द्वारा जनसेवा आदि के कार्य सम्पादित किये जाते हैं।
- विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों को शुद्ध, पौष्टिक व ऋतु के अनुकूल भोजन दिया जाता है। विविध पर्वों तथा अवसरों पर अवसर के अनुरूप भोजन तथा फलाहार की भी व्यवस्था की जाती है।
- विद्यार्थियों के निवास हेतु छात्रावास की सुविधा उपलब्ध है। छात्र/छात्राओं को अलग-अलग छात्रावासों में उनकी योग्यता के अनुसार रहने की सुविधा प्रदान की जाती है।
- पतंजलि विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों को प्रतिदिन योगासन, प्राणायाम तथा ध्यान आदि का अभ्यास कराया जाता है जिससे वे स्वस्थ तथा प्रसन्न रहते हैं।
- यदि कोई छात्र/छात्रा यदा कदा रोगग्रस्त होता है तो पतंजलि योगपीठ परिसर में स्थित ओ.पी.डी., आई.पी.डी. में उनकी चिकित्सा की समुचित व्यवस्था की गयी है। इसके अतिरिक्त पतंजलि योगपीठ परिसर में पंचकर्म व षट्कर्म सहित अत्याधुनिक मशीनों से युक्त पैथोलॉजी, रेडियोलॉजी, कार्डियोलॉजी आदि में सभी प्रकार के चिकित्सीय परीक्षणों की सुविधाएं उपलब्ध हैं।
- विश्वविद्यालय में प्राचीन आर्य साहित्य तथा आधुनिक विज्ञान और तकनीक की पुस्तकों से सुसज्जित पुस्तकालय है जिसमें 15900 पुस्तकें उपलब्ध हैं। वाचनालय में विभिन्न समाचार-पत्र, पत्रिकाएं भी मंगायी जाती हैं। पुस्तकालय में इन्टरनेट की सुविधा भी उपलब्ध है। छात्र/छात्राओं को यथासंभव ऋण के रूप में भी पुस्तकें प्रदान करायी जाती हैं।
- विश्वविद्यालय में सामाजिक राष्ट्रीय उत्सवों यथा होली, दीपावली, मकर-संक्रान्ति, रक्षाबंधन स्वतन्त्रता दिवस, गणतंत्र दिवस आदि को पूर्ण उल्लास से मनाया जाता है। छात्र/ छात्राओं को 16 संस्कारों का व्यावहारिक ज्ञान कराने का प्रयत्न किया जाता है।
- प्रवेश में निर्धन व मेधावी छात्रों को वरीयता प्रदान की जाती है तथा उनकी यथासंभव सभी प्रकार से सहायता करने का प्रयत्न किया जाता है।
- छात्र-छात्राओं को विशेषज्ञों द्वारा संस्कृत संभाषण का विशेष अभ्यास कराया जाता है।
- छात्र/ छात्राओं में ज्ञान-वर्द्धन तथा अपनी सभ्यता- संस्कृति तथा इतिहास आदि का ज्ञान, निष्ठा व आत्म गौरव जागृत करने के उद्देश्य से विविध धार्मिक स्थलों, शैक्षणिक, ऐतिहासिक, प्रौद्योगिकी सम्बन्धी संस्थानों का परिभ्रमण भी कराया जाता है।
- योगर्षि स्वामी रामदेव जी महाराज के निदेशन में देश के शीर्ष साधु-सन्तों, विद्वानों, बुद्धिजीवियों द्वारा छात्र/छात्राओं को विशेष प्रबोधन की व्यवस्था की गयी है।
- पतंजलि विश्वविद्यालय में दैनिक प्रयोग की वस्तुओं को विश्वविद्यालय के विक्रय केन्द्र से क्रय किया जा सकता है।
- परिसर में पंजाब नेशनल बैंक और भारतीय स्टेट बैंक की शाखायें भी स्थित है जहां ए.टी.एम. की सुविधा भी उपलब्ध है।
- छात्र/छात्राओं, अभिभावकों तथा आगन्तुकों की सुविधा के लिए परिसर में ही ट्रैवल ऐजेण्ट का कार्यालय स्थित है।

पतंजलि विश्वविद्यालय का परिसर

पतंजलि विश्वविद्यालय का स्थायी परिसर निमार्णाधीन है। वर्तमान में इसका शिविर कार्यालय पतंजलि योगपीठ में स्थित है, पतंजलि योग पीठ दिल्ली-हरिद्वार राष्ट्रीय राजमार्ग पर हरिद्वार से 17 किमी. दक्षिण में तथा रूड़की से 13 किमी उत्तर में स्थित है।

शैक्षिक वर्ष २०१०-११ से संचालित पाठ्यक्रम

शैक्षिक वर्ष 2010-11 में पतंजलि विश्वविद्यालय में निम्न पाठ्यक्रम संचालित किये जाने का प्रस्ताव है:

(1) बी.ए. (योग विज्ञान के साथ)	B.A. (With Yoga Science)
(2) एम.ए./ एम.एस-सी. (योग विज्ञान)	M.A./ M.Sc (Yoga Science)
(3) पंचकर्म में स्नातकोत्तर डिप्लोमा	(P.G. Diploma in Panchkarma)
(4) योग विज्ञान में स्नातकोत्तर डिप्लोमा	(P.G. Diploma in Yoga Science)
(5) योग स्वास्थ्य एवं सांस्कृतिक पर्यटन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा	(P.G. Diploma in Yoga Health and Cultural Tourism)

प्रवेश के नियम:

बी.ए. (योग विज्ञान के साथ) B.A. (With Yoga Science)

इस पाठ्यक्रम की अवधि तीन वर्ष की होगी जो 6 सेमेस्टर में विभक्त होगी। बी.ए. में तीन विषयों के शिक्षण की व्यवस्था होगी जिनमें योग विज्ञान एक अनिवार्य विषय होगा। इसके अतिरिक्त दो अन्य विषय होंगे।

प्रवेश अर्हता- प्रवेश के लिए न्यूनतम अर्हता 10+2 परीक्षा कम से कम 50% अंको के साथ उत्तीर्ण की हो।

अधिकतम आयु- 1 अगस्त 2010 को 25 वर्ष।

प्रवेश श्रेष्ठता (Merit)/ साक्षात्कार (Interview) के आधार पर होगा।

सेमेस्टर 6 माह की अवधि का होगा । पाठ्यक्रम में सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक (जहाँ आवश्यक होगा) शिक्षण प्रदान किया जायेगा।

शुल्क: वार्षिक शिक्षण शुल्क 15000/- रूपये होगा जिसका 50% भुगतान प्रति सत्र (Each Semester) के आधार पर किया जा सकता है।

एम.ए. (योग विज्ञान) M.A.(Yoga Science)

इस पाठ्यक्रम की अवधि दो वर्ष की होगी जो 4 सेमेस्टर में विभक्त होगा।

प्रवेश अर्हता- मान्यता प्राप्त किसी विश्वविद्यालय से न्यूनतम 50% अंको के साथ स्नातक उपाधि (10+2+3) उत्तीर्ण की हो।

अधिकतम आयु- 1 अगस्त 2010 को 30 वर्ष।

प्रवेश श्रेष्ठता (Merit)/ साक्षात्कार (Interview) के आधार पर होगा।

पाठ्यक्रम में सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक शिक्षण प्रदान किया जायेगा।

शुल्क: वार्षिक शिक्षण शुल्क 20000/- रूपये होगा जिसका 50% भुगतान प्रति सत्र (Each Semester) के आधार पर किया जा सकता है।

एम.एम-सी. (योग विज्ञान) M.Sc.(Yoga Science)

इस पाठ्यक्रम की अवधि दो वर्ष की होगी जो 4 सेमेस्टर में विभक्त होगा।

प्रवेश अर्हता- मान्यता प्राप्त किसी विश्वविद्यालय से न्यूनतम 50% अंको के साथ विज्ञान में स्नातक उपाधि (10+2+3) उत्तीर्ण की हो।

अधिकतम आयु- 1 अगस्त 2010 को 30 वर्ष।

प्रवेश श्रेष्ठता (Merit)/ साक्षात्कार (Interview) के आधार पर होगा।

पाठ्यक्रम में सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक शिक्षण प्रदान किया जायेगा।

शुल्कः वार्षिक शिक्षण शुल्क 20000/- रूपये होगा जिसका 50% भुगतान प्रति सत्र (Each Semester) के आधार पर किया जा सकता है।

पंचकर्म में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (P.G. Diploma in Panchkarma)

प्रवेश अहर्ताः मान्यता प्राप्त किसी विश्वविद्यालय से आयुर्वेद में स्नातक उपाधि न्यूनतम 60% अंको के साथ।

पाठ्यक्रम की अवधि एक वर्ष की होगी जो दो सत्रों में विभक्त होगी। पाठ्यक्रम में सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक शिक्षण प्रदान किया जायेगा।

वार्षिक शिक्षण शुल्क 35000/- रुपये होगा जो दो भागों में विभक्त होगा। भुगतान प्रति सत्र के अनुसार किया जा सकता है।

अधिकतम आयु- 1 अगस्त 2010 को 35 वर्ष

योग विज्ञान में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (P.G. Diploma in Yoga Science)

प्रवेश अहर्ताः मान्यता प्राप्त किसी विश्वविद्यालय से 50 प्रतिशत अंको के साथ स्नातक उपाधि (10+2+3)।

पाठ्यक्रम की अवधि एक वर्ष की होगी जो दो सत्रों में विभक्त होगी। पाठ्यक्रम में सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक शिक्षण प्रदान किया जायेगा।

वार्षिक शिक्षण शुल्क 20000/- रुपये होगा जो दो भागों में विभक्त होगा। भुगतान प्रति सत्र के अनुसार किया जा सकता है।

अधिकतम आयु- 1 अगस्त 2010 को 35 वर्ष

योग स्वास्थ्य एवं सांस्कृतिक पर्यटन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा

(P.G. Diploma in Yoga Health and Cultural Tourism Science)

प्रवेश अहर्ताः मान्यता प्राप्त किसी विश्वविद्यालय से 50 प्रतिशत अंको के साथ स्नातक उपाधि (10+2+3)।

पाठ्यक्रम की अवधि एक वर्ष की होगी जो दो सत्रों में विभक्त होगी। पाठ्यक्रम में सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक शिक्षण प्रदान किया जायेगा।

वार्षिक शिक्षण शुल्क 20000/- रुपये होगा जो दो भागों में विभक्त होगा। भुगतान प्रति सत्र के अनुसार किया जा सकता है।

अधिकतम आयु- 1 अगस्त 2010 को 35 वर्ष

छात्रों की वेशभूषा

गणवेश : प्रत्येक छात्र/छात्रा को योग की कक्षाओं तथा सामान्य कक्षाओं में विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित श्वेत वेशभूषा को पहनना अनिवार्य होगा।

छात्रावास

प्रत्येक छात्र/छात्रा को यथासंभव छात्रावास की सुविधा प्रदान की जाएगी जहाँ भोजनालय भी उपलब्ध होंगा। प्रत्येक छात्र/ छात्रा से अपेक्षा की जाती है कि वे छात्रावास में अनुशासनबद्ध रहेगें और संस्था के नियमों का पालन करेंगे।

छात्रावास का शुल्क निम्न प्रकार होगा:

1. आवास शुल्क रूपये 1000/- प्रतिमाह
2. भोजन शुल्क रूपये 1800/- प्रतिमाह

भुगतान कैसे करें?

सभी भुगतान बैंक ड्राफ्ट द्वारा किये जायेंगे जोकि 'पतंजलि विश्वविद्यालय' के नाम हरिद्वार में देय होंगे।

प्रवेश सम्बन्धी विवरणिका एवं आवेदन पत्र: विवरण पुस्तिका एवं आवेदन पत्र रुपये 100/- का बैंक ड्राफ्ट जो कि 'पतंजलि विश्वविद्यालय' के नाम हरिद्वार में देय हो के भुगतान द्वारा प्राप्त किए जा सकते हैं (डाक द्वारा मंगाने पर 50 रू डाक व्यय अतिरिक्त देय होगा)। आवेदन पत्र प्राप्त करने की अंतिम तिथि 15 जुलाई, 2010 है। ड्राफ्ट के साथ स्वयं का पता लिखा हुआ लिफाफा 11'' x 9'' इंच का संलग्न करें। आवेदन पत्र भरकर जमा करने की अंतिम तिथि 15 जुलाई, 2010 है। आवेदन पत्र प्राप्त करने व जमा करने का पता है:

प्रो. राम कुमार शर्मा,
विशेष कार्य अधिकारी, पतंजलि विश्वविद्यालय, पतंजलि योगपीठ,
दिल्ली-हरिद्वार राष्ट्रीय राजमार्ग, हरिद्वार-249402 **(उत्तराखण्ड)**
फोन नं. (प्रात: 10 बजे से सांय 5 बजे तक) 01334-242526, E-mail: uopyp2009@gmail.com

अन्य महत्वपूर्ण तिथियां

1.	**आवेदन पत्र :**		
	(अ) प्राप्त करने की अन्तिम तिथि	-	15 जुलाई 2010
	(ब) जमा करने की अंतिम तिथि	-	15 जुलाई 2010
2.	**अर्हता प्राप्त छात्रों को प्रवेश पत्रों का प्रेषण**	-	20 जुलाई 2010
3.	**(अ) छात्रों का साक्षात्कार**	-	28 व 29 जुलाई 2010
	(ब) चयनित छात्रों का पंजीकरण	-	28 व 29 जुलाई 2010
	(स) छात्रों द्वारा छात्रावास में स्थानग्रहण	-	28 व 29 जुलाई 2010
4.	**छात्रों का दीक्षारम्भ समारोह**	-	04 अगस्त 2010
5.	**कक्षाएं प्रारम्भ**	-	05 अगस्त 2010

नोट:

- समस्त पाठ्यक्रमों में 6% सीटों पर चयन कुलपति के विवेकानुसार किया जायेगा।
- चयन प्रक्रिया पूर्णतया विभिन्न परीक्षाओं में प्राप्त अंकों एवं साक्षात्कार के आधार पर होगी।

विश्वविद्यालय की मातृ संस्थाएं राष्ट्रीय

दिव्य योग मन्दिर (ट्रस्ट)

कृपालु बाग आश्रम, कनखल

हरिद्वार की पवित्र भूमि एवं पतित पावनी माँ गंगा के तट पर, विलक्षण प्रतिभा के धनी एवं ब्रह्मनिष्ठ, तितिक्षु संन्यासी, परम पूज्य स्वामी कृपालु देव जी महाराज ने सन् 1932 में विश्व ज्ञान मंदिर की स्थापना की, जो बाद में कृपालु बाग के नाम से विख्यात हुआ। कृपालु बाग आश्रम स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान रास बिहारी बोस जैसे क्रान्तिकारियों की शरणस्थली रहा। 5 जनवरी 1995 को पूज्यपाद योगऋषि स्वामी रामदेव जी महाराज एवं श्रद्धेय आचार्य बालकृष्ण जी महाराज ने पूज्य स्वामी शंकरदेव जी महाराज के संरक्षण में इसी आश्रम से दिव्य योग मंदिर (ट्रस्ट) की स्थापना कर जनसेवा कार्य आरम्भ किया। वर्तमान में यहाँ से कृपालु बाग आश्रम तथा दिव्य फार्मेसी की एक शाखा व विक्रय केन्द्र का संचालन किया जा रहा है। दिव्य योग मंदिर (ट्रस्ट), वर्तमान में समस्त आयुर्वेदिक सेवाओं का संचालन कर रहा है।

पतंजलि योगपीठ (ट्रस्ट)

योग को विश्व पटल पर प्रतिष्ठापित करने, योग की वैदिक परम्परा के अध्ययन व उस पर वैज्ञानिक अनुसंधान करने तथा साथ ही योग की सम्पूर्ण गतिविधियों व विविध प्रकल्पों को अनुशासित रूप से संचालित करने हेतु 4 फरवरी सन् 2005 को योगऋषि स्वामी रामदेव जी महाराज की प्रेरणा से दिल्ली में पतंजलि योगपीठ (ट्रस्ट) की स्थापना की गयी। ट्रस्ट द्वारा योग की लगभग समस्त गतिविधियाँ जैसे-योग विज्ञान शिविरों का आयोजन तथा पतंजलि योग समितियों का प्रबन्धन किया जाता है। योग को शिक्षा का अनिवार्य अंग बनाने हेतु योग से सम्बन्धित पाठ्यक्रम का निर्माण व उसे विद्यालय, महाविद्यालय तथा विश्वविद्यालय स्तर पर लागू कराना पतंजलि योगपीठ (ट्रस्ट) की प्राथमिकता है।

भारत स्वाभिमान (ट्रस्ट)

स्वदेशी चिकित्सा पद्धतियों, योग, आयुर्वेद व प्राकृतिक चिकित्सा से देश के अन्तिम व्यक्ति को आरोग्य देना, भारतीय भाषाओं में देश के बच्चों को शिक्षा व संस्कार देकर, शिक्षा का स्वेदशीकरण, भारतीयकरण करना, भ्रष्टाचार व आर्थिक असंतुलन को मिटाकर देश के सम्पूर्ण संसाधनों में देश के सब लोगों को सहभागी बनाकर देश की बेरोजगारी, गरीबी, भूख के अभाव को दूर करना, जल प्रबन्धन, कृषि के औद्योगिककरण, पर्यावरण की रक्षा, स्वच्छता व जनसंख्या के नियन्त्रण से तथा स्वदेशी की नीतियों एवं भारतीय सांस्कृतिक व आध्यात्मिक परम्पराओं की रक्षा करके भारत की एक आदर्श आध्यात्मिक राष्ट्र के रूप में प्रतिष्ठापना कर देश को विश्व की सर्वोच्य महाशक्ति के रूप में खड़ा करने के उद्देश्य से 05 जनवरी 2009 को भारत स्वाभिमान (ट्रस्ट) की स्थापना की गई।

अन्तर्राष्ट्रीय

पतंजलि योगपीठ व योगऋषि स्वामी रामदेव जी महाराज के दर्शन व उद्देश्यों के अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रचार-प्रसार व क्रियान्वयन के लिए पतंजलि योगपीठ (यू.के.) ट्रस्ट, पतंजलि योग फाउन्डेशन (ट्रस्ट), यू.एस.ए., पतंजलि योगपीठ (ट्रस्ट), कनाडा तथा पतंजलि योगपीठ (ट्रस्ट), काठमांडू, नेपाल में स्थापित किये गये हैं। ये सभी ट्रस्ट भारतीय संस्कृति के उदात्त पक्षों योग व आयुर्वेद सहित वेद, उपनिषद इत्यादि के दर्शन व शिक्षाओं के प्रचार-प्रसार व क्रियान्वयन में अहर्निश संलग्न हैं। स्कॉटलैण्ड के लिटिल कम्बरी द्वीप में पतंजलि योगपीठ (यू.के.) ट्रस्ट व टेक्सास के ह्यूस्टन में पतंजलि योगपीठ फाउन्डेशन (ट्रस्ट), यू.एस.ए. के भव्य मुख्यालय स्थापित किये जा रहे हैं।

पतंजलि योगपीठ का परिचय व उसके द्वारा संचालित सेवा कार्य

पतंजलि योगपीठ- प्रथम चरण

- 6 अप्रैल 2006 को भारत के उपराष्ट्रपति द्वारा देश के 17 मुख्यमंत्रियों व राज्यपाल आदि विशिष्ट लोगों की उपस्थिति में पतंजलि योगपीठ, प्रथम चरण का उद्घाटन।
- योग एवं आयुर्वेद ओ.पी.डी. में छः हजार से दस हजार रोगियों को निःशुल्क चिकित्सा परामर्श की सुविधा उपलब्ध।
- अत्याधुनिक मशीनों व उपकरणों से युक्त विश्व की आधुनिकतम पैथोलॉजी, रेडियोलॉजी, कार्डियोलॉजी लैब में विभिन्न रोगों के चिकित्सकीय परीक्षणों की सुविधा न्यूनतम मूल्य पर उपलब्ध।
- योग को आधुनिक चिकित्सा के मानदण्डों पर स्थापित करने के लिए अत्याधुनिक मशीनों से युक्त योग अनुसंधान विभाग।
- निःशुल्क योग कक्षाएं योगाचार्यों द्वारा (प्रत्येक घंटे के अंतराल पर)
- निःशुल्क आयुर्वेद व योग चिकित्सा परामर्श सुयोग्य वैद्यों द्वारा।
- भव्य यज्ञशाला में प्रतिदिन वैदिक परम्परा व वैज्ञानिक पद्धति से अग्निहोत्र किया जाता है।
- आयुर्वेद के अंतर्गत पंचकर्म चिकित्सा, षट्कर्म चिकित्सा, शल्य चिकित्सा (क्षार-सूत्र, कर्णभेदन व अग्निकर्म आदि)

पतंजलि योगपीठ, प्रथम चरण

पतंजलि पैथोलॉजी प्रयोगशाला एवं अनुसंधान केन्द्र

दंत चिकित्सा व नेत्र चिकित्सा सेवाएं न्यूनतम मूल्य पर उपलब्ध हैं।

- दिव्य फार्मेसी व पतंजलि आयुर्वेद लिमिटेड द्वारा निर्मित उच्च गुणवत्ता युक्त आयुर्वेदिक औषधियाँ व हर्बल प्रोडक्टस न्यूनतम मूल्य पर उपलब्ध हैं।
- संस्था की पुस्तकें, वी.सी.डी., डी.वी.डी. एम.पी.-3, ऑडियो सी.डी. इत्यादि उपलब्ध हैं।
- आई.पी.डी./अतिथि गृह में न्यूनतम मूल्यों पर, वातानुकूलित व साधारण आवास व्यवस्था, दैनिक यज्ञ एवं योगकक्षा के साथ उपलब्ध है।
- पुस्तकालय व वाचनालय की सुन्दर व्यवस्था साइबर कैफे के साथ उपलब्ध है।
- अन्नपूर्णा में शुद्ध देशी घी/तैल से निर्मित सभी तरह के शुद्ध सात्विक आहार एवं मिष्ठान उचित मूल्य पर उपलब्ध हैं।
- पतंजलि योगपीठ के समीप में स्थित दिव्य औषधीय उद्यान में भ्रमण व औषधीय पौधों की उपलब्धता की व्यवस्था है।
- पतंजलि योगपीठ में व्यवस्थित व विशाल पार्किंग की व्यवस्था है।

पतंजलि योगपीठ- द्वितीय चरण

- यहां 60 हजार वर्ग फुट का वृहत् वातानुकूलित ऑडिटोरियम है जहाँ हजारों साधक एक साथ बैठकर योग, प्राणायाम व ध्यान आदि कर सकते हैं।
- 10 हजार लोगों के योगाभ्यास व 50 हजार से अधिक लोगों की सभा के लिए 2 लाख वर्गफुट का एक विशाल ऑडिटोरियम है।
- 44 हजार वर्ग फुट का विशालकाय पंचकर्म व षट्कर्म केन्द्र, जहाँ लगभग 1000 व्यक्ति प्रतिदिन पंचकर्म व षट्कर्म का लाभ प्राप्त कर सकेंगे।
- 950 कक्षों में आगन्तुकों की वातानुकूलित व गैर वातानुकूलित आवास व्यवस्था है।
- 1000 लोगों की आवास व्यवस्था वाली एक नि:शुल्क धर्मशाला है।
- 20 हजार वर्ग फुट के आकार का भव्य लंगर हॉल, जहाँ आगन्तुक नि:शुल्क भोजन प्रसाद ग्रहण करते हैं।
- प्रतिदिन 5,000 आगन्तुकों की भोजन व्यवस्था की विशाल अन्नपूर्णा।
- वानप्रस्थ आश्रम के अन्तर्गत स्वस्थ, समर्थ व समर्पित वरिष्ठ नागरिकों की आवास व्यवस्था हेतु 350 अपार्टमेन्ट।

- 50 हजार वर्ग फुट में निर्मित भव्य संग्रहालय।
- 11 हजार वर्ग फुट आकार का योग, आयुर्वेद व प्राच्य विधाओं पर आधारित साहित्य व सामग्री हेतु विक्रय केन्द्र।
- भारत माता नमन स्थल, जहाँ भारत के 600 से अधिक जनपदों से एकत्रित की गई पवित्र मिट्टी रखी जायेगी।
- ''भारत स्वाभिमान'' के केन्द्रीय कार्यालय का निर्माण कार्य चल रहा है।

पतंजलि चिकित्सालय:-

देश व विश्व भर में लगभग एक हजार पतंजलि चिकित्सालयों पर एक हजार कुशल वैद्यों द्वारा नि:शुल्क चिकित्सा परामर्श दिया जा रहा है।

योगग्राम:-

प्रकृति की सुरम्य गोद में आधुनिक सुविधाओं से युक्त इको फ्रेंडली 'योगग्राम' का निर्माण कराया गया है, जहाँ लम्बे समय तक साधक योग, ध्यान, पंचकर्म तथा षट्कर्म का लाभ ले सकेंगे। इसके साथ ही यहाँ सम्पूर्ण प्राकृतिक चिकित्सा की विश्वस्तरीय सुविधा उपलब्ध है।

प्रकृति की सुरम्य गोद में अवस्थित 'योगग्राम' का विहंगम दृश्य

पतंजलि गो विज्ञान एवं जड़ी-बूटी कृषि अनुसंधान संस्थान:-

पतंजलि गो विज्ञान एवं जड़ी-बूटी कृषि अनुसंधान संस्थान की दो शाखायें हैं, जिनमें से एक हरिद्वार में तथा दूसरी उत्तरकाशी में स्थित है। इसके अन्तर्गत निम्न सेवा कार्य संचालित किये जा रहे हैं:

- **गोशाला :** योगपीठ में भारतीय नस्ल की गायों के संरक्षण, संबर्धन व नस्ल सुधार के उद्देश्य से दो गऊशालाओं का निर्माण कराया गया है जिसमें हरियाणवी, साहिवाल और गुजराती नस्ल की उच्च श्रेणी की लगभग 200 गाय हैं।
- **पतंजलि औषधीय उद्यान :** पतंजलि औषधीय उद्यान में औषधीय पौधों की खेती एवं उन पर वैज्ञानिक शोध का कार्य किया जाता है। जिसके लिए उद्यान में ग्रीन हाउस, पॉली हाउस व ग्लास हाउस की स्थापना की गयी है। हिमालय सहित देश के समस्त भागों से प्राप्त दुर्लभ औषधीय पौधों को विलुप्त होने से बचाने तथा उन्हें शोध कार्य और उपचार हेतु उपलब्ध कराने के उद्देश्य से औषधीय उद्यान में रोपा गया है और उनकी वंश वर्षा की जा रही है। उद्यान में वर्तमान में 450 औषधीय पौधों की प्रजातियां उपलब्ध हैं।

पतंजलि योगपीठ स्थित गौशाला

पतंजलि औषधीय उद्यान

कृषि फार्म/आर्गेनिक कृषि :-

पतंजलि योगपीठ द्वारा बड़े पैमाने पर पारम्परिक फसलों एवं औषधीय पौधों की उच्च तकनीकी से आर्गेनिक फार्मिंग की जा रही है। गाय के गोबर से वर्मी कम्पोस्ट विधि से खाद का निर्माण किया जाता है। दिव्य फार्मेसी में औषधियों के निर्माण से प्राप्त होने वाले बाई प्रोडक्ट को नेडप विधि से उच्च श्रेणी खाद में बदला जाता है, जिसका प्रयोग यहाँ कृषि में होता है।

नेडप विधि से खाद का निर्माण

गंगोत्री साधना केन्द्र:-

संस्था की एक शाखा हिमालय की उच्च पर्वत श्रेणियों के बीच गंगोत्री में अवस्थित है, जहाँ साधकगण प्रकृति की गोद में बैठकर ईश्वर का ध्यान करते हैं।

पतंजलि योग समिति:-

देश भर में केन्द्र, राज्य, मण्डल, जिला, ब्लॉक एवं ग्राम स्तर पर 600 से अधिक पतंजलि योग समितियां योग प्रशिक्षण के कार्य में संलग्न हैं।

दिव्य प्रकाशन:-

योगपीठ परिवार के उद्देश्यों, दर्शन व गतिविधियों पर आधारित, भारतीय प्राच्य विधाओं जैसे योग, आयुर्वेद, संस्कृति, संस्कार, राष्ट्रप्रेम एवं औषधीय पादप तथा पंचगव्य आदि विषयों पर हिन्दी, अंग्रेजी तथा देश की अन्य प्रमुख भाषाओं में उत्कृष्ट श्रेणी की पुस्तकों के प्रकाशन का कार्य दिव्य प्रकाशन द्वारा निष्पन्न होता है। योगऋषि स्वामी रामदेव जी महाराज द्वारा लिखित योग साधना व योग चिकित्सा रहस्य, प्राणायाम रहस्य, योग दर्शन, गीतामृत, भक्ति गीतांजलि तथा आचार्य बालकृष्ण जी महाराज द्वारा लिखित आयुर्वेद सिद्धान्त रहस्य, जड़ी-बूटी रहस्य, विज्ञान की कसौटी पर योग तथा औषध दर्शन दिव्य प्रकाशन द्वारा प्रकाशित प्रमुख पुस्तकें हैं, जो करोड़ों लोगों द्वारा पढ़ी गयी हैं।

दिव्य प्रकाशन द्वारा प्रकाशित पुस्तकें

दिव्य योग साधना:-

हिन्दी, अंग्रेजी सहित देश की प्रमुख भाषाओं में योग, आयुर्वेद, संस्कृति, संस्कार व भजनों पर आधारित आडियो-वीडियो सामग्री जैसे डी.वी.डी., वी.सी.डी., एम.पी.-3 तथा कैसेटों के निर्माण व वितरण आदि का प्रबन्ध दिव्य योग साधन द्वारा किया जाता है। योगऋषि स्वामी रामदेव जी महाराज द्वारा गाये गये भजनों सहित उनके योग व आयुर्वेद आधारित विषयों पर सौ से भी अधिक डी.वी.डी., वी.सी.डी. व आडियो कैसेट का निर्माणादि का प्रबन्धन दिव्य योग

साधना द्वारा किया जा चुका है, जिसमें स्वामी जी महाराज द्वारा विभिन्न रोगों के लिये बताये जाने वाले योग-उपचार तथा उनके भजनों पर आधारित भक्ति गीतांजलि व राष्ट्र वंदना की सी.डी. प्रमुख हैं।

योग संदेश:-

योग, आयुर्वेद, संस्कृति, संस्कार व अध्यात्म की संवाहक योग संदेश मासिक पत्रिका का प्रकाशन हिन्दी, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी, पंजाबी, बंगाली, उड़िया, असमी, नेपाली, कन्नड़, तेलगु भाषा में किया जाता है। देश-विदेश में प्रतिमाह योग संदेश पत्रिका के दस लाख से भी अधिक पाठक हैं।

दिव्य फार्मेसी:-

ऋषियों के प्राचीन ज्ञान एवं अत्याधुनिक वैज्ञानिक पद्धति के समन्वय से उच्च गुणवत्ता युक्त आयुर्वेदिक औषधियों के निर्माण हेतु विशालकाय दिव्य फार्मेसी की स्थापना की गयी है। यह इकाई ISO 9001:2000, ISO 9001:14001 : 18001, WHO, GMP, GPP, GLP प्रमाणित देश की विशालतम आयुर्वेद औषध निर्माण इकाइयों में एक है।

दिव्य फार्मेसी, ए-१, औद्योगिक क्षेत्र, हरिद्वार

पतंजलि आयुर्वेद लि., डी-३८, औद्योगिक क्षेत्र, हरिद्वार

पतंजलि आयुर्वेद लि.

पतंजलि आयुर्वेद लिमिटेड, हरिद्वार के औद्योगिक क्षेत्र में स्थित अत्याधुनिक संयन्त्रों से युक्त औद्योगिक इकाई है। इस औद्योगिक इकाई को शुद्ध, गुणवत्तायुक्त एवं वैज्ञानिक रूप से विकसित खनिज एवं वानस्पतिक उत्पादों के निर्माण हेतु स्थापित किया गया है। आयुर्वेद को विज्ञान सम्मत रूप से स्थापित करने के उद्देश्यों के साथ अत्याधुनिक टेक्नोलॉजी और प्राचीन ज्ञान के समन्वय से पूज्य योगऋषि स्वामी रामदेव जी महाराज की प्रेरणा से एवं पूज्य आचार्य बालकृष्ण जी महाराज ने पतंजलि आयुर्वेद लिमिटेड की स्थापना वर्ष 2006 में की। उक्त इकाई को अत्याधुनिक सेवाओं एवं संसाधनों हेतु ISO 9001, ISO 1800, WHO, GMP, GLP आदि प्रमाण-पत्र प्राप्त हैं।

पतंजलि फूड एवं हर्बल पार्क:-

देश में योग क्रान्ति के बाद कृषि क्रान्ति के उद्देश्य से हरिद्वार जिले के पदार्था ग्राम में भारत सरकार के खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय के सहयोग से योगऋषि स्वामी रामदेव जी महाराज की प्रेरणा व आचार्य बालकृष्ण जी महाराज के निर्देशन में विश्व के सबसे बड़े फूड एवं हर्बल पार्क का निर्माण कराया जा रहा है।

लगभग 500 करोड़ रुपए की राशि से निर्मित होने वाले इस पार्क के बनने के पश्चात् कृषकों को उनकी उपजों का

हरिद्वार के पदार्था में स्थित पतंजलि फूड एण्ड हर्बल पार्क

उचित मूल्य मिलेगा जिससे किसानों एवं देश की अर्थव्यवस्था मजबूत होगी। इस फूड पार्क से लगभग 15000 व्यक्तियों को प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार प्राप्त होगा।

गुरुकुल का सँचालनः हरियाणा के किशनगढ़, घासेड़ा में आधुनिक एवं प्राच्य विषय की शिक्षा के साथ विशाल गुरुकुल का सँचालन किया जा रहा है, जहाँ देश-विदेश के छात्रों का गुरुकुलीय वातावरण में सर्वांगीण विकास हो रहा है।

आयुर्वेद महाविद्यालय -

दिव्य योग मंदिर (ट्रस्ट) के अन्तर्गत पतंजलि भारतीय आयुर्विज्ञान एवं अनुसंधान संस्थान की स्थापना की गयी है। संस्थान ने वर्ष 2009-10 से अध्यापन कार्य प्रारम्भ कर दिया है। संस्थान में आयुर्वेद शिक्षण की व्यवस्था है। संस्थान आयुर्वेद में बी.ए.एम.एस. उपाधि प्रदान करता है। स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा बी.ए.एम.एस. उपाधि के लिये 50 प्रवेश क्षमता के साथ संस्थान को अनुमति प्रदान की गयी है। संस्थान प्रबन्धन प्रवेश क्षमता को 100 कराने के लिये प्रयत्नशील है। दिव्य योग मंदिर (ट्रस्ट) ने संस्थान के लिये भव्य भवन का निर्माण कराया है जो 100 प्रवेश क्षमता के लिये पर्याप्त है। संस्थान में विद्वान शिक्षक नियुक्त किये गये हैं। अध्ययन अध्यापन के लिए संस्थान में उत्तम वातावरण विद्यमान है।

पतंजलि आयुर्वेद महाविद्यालय

हमारी गतिविधियाँ-एक विहंगम दृष्टि

योग विज्ञान शिविरों के माध्यम से योग, प्राणायाम, अध्यात्म, आरोग्य वैयक्तिक व राष्ट्रीय चरित्र उन्नयन की शिक्षा

- योगऋषि स्वामी रामदेव जी महाराज के सान्निध्य में वर्ष 1992 से मई 2010 तक 1000 से अधिक आवासीय एवं गैर आवासीय योग विज्ञान शिविरों का आयोजन किया जा चुका है।

- अभी तक योगऋषि स्वामी रामदेव जी महाराज के पावन सान्निध्य में आयोजित योग विज्ञान शिविरों में प्रत्यक्ष रूप से ढाई करोड़ तथा परोक्ष रूप से लगभग 100 करोड़ से भी अधिक लोगों ने मानसिक, शारीरिक व आध्यात्मिक लाभ प्राप्त किया है।
- शिविरों में रक्तदान, वृक्षारोपण, स्वदेशी, स्वच्छता एवं राष्ट्रप्रेम को जीवन का अंग बनाने पर विशेष जोर दिया जाता है।
- योग को सैन्य, अर्द्धसैन्य बलों सहित प्रशासन, स्कूल, कॉलेज, कारपोरेट जगत् में लोकप्रिय बनाने हेतु योग शिविरों का आयोजन किया जाता है।
- किसी योगी द्वारा प्रथम बार राष्ट्रपति भवन में योग विज्ञान शिविर का आयोजन किया गया।

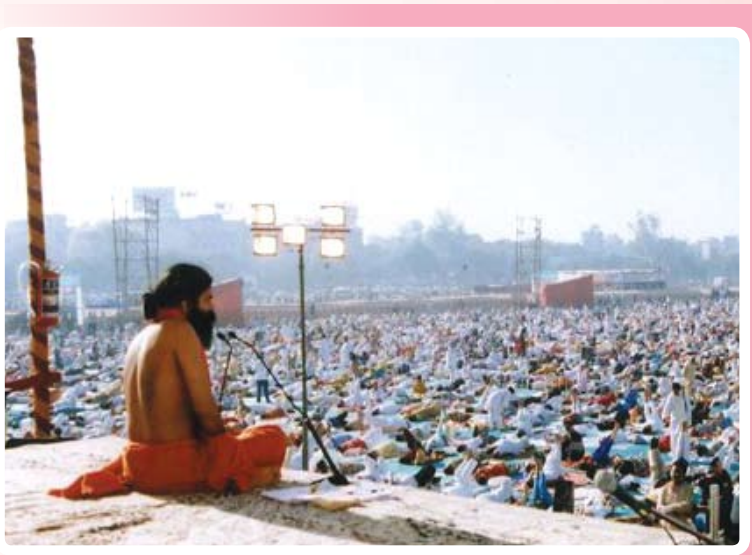

योग शिविर में हजारों साधकों को योग की शिक्षा प्रदान करते स्वामी रामदेव जी महाराज

विश्व के गणमान्य लोग योग से जुड़े हैं भारत के भूतपूर्व एवं वर्तमान महामहिम राष्ट्रपति व उपराष्ट्रपति, प्रधानमन्त्री, विभिन्न राज्यों के राज्यपाल एवं मुख्यमंत्री, न्यायपालिका के शीर्ष न्यायाधीश, सजग ब्यूरोक्रेट्स, कला एवं संस्कृति जगत् की हस्तियां, प्रबुद्ध मीडियाकर्मी, उद्योग एवं वाणिज्य जगत् के विख्यात व्यक्तित्व, सैन्य व अर्द्धसैन्य बलों के अधिकारी, विभिन्न शीर्ष सत्तासीन प्रबुद्ध व्याक्तियों सहित नोबल पुरस्कार विजेता हैरी क्रोटो, ब्रिटेन की स्वास्थ्य मंत्री सुश्री पेट्रीसिया हैविट से लेकर अनेक विश्वविख्यात लोगों ने स्वामी जी से मिलकर योग विद्या का लाभ उठाया है।

अन्तर्राष्ट्रीय योग विज्ञान शिविर प्रथम बार भारत से बाहर जुलाई 2006 में यू.के. की धरती पर योग विज्ञान शिविरों का सफल आयोजन किया गया। अब तक यू.के., यू.एस.ए., जापान, कनाडा, दुबई, पूर्वी अफ्रीका के युगांडा, केन्या व तंजानिया आदि देशों में अनेकों योग विज्ञान शिविरों का सफल आयोजन किया तथा विदेशों में योग को व्यापक स्वीकृति मिली।

क्लीनिकल कंट्रोल ट्रायल/योग अनुसंधान योग को विज्ञान की कसौटी पर कसने के लिए चुनौतीपूर्ण योग विज्ञान शिविरों में क्लीनिकल कंट्रोल ट्रायल के उपरान्त विभिन्न रोगों की चिकित्सा में योग प्राणायाम के चमत्कारिक परिणाम सामने आये हैं।

पतंजलि योग समिति के माध्यम से आरोग्य व चरित्र निर्माण का आन्दोलन

- देश भर में 600 पतंजलि योग समितियों एवं भारत स्वाभिमान (ट्रस्ट) के 15 संगठनों के माध्यम से लगभग 600 जिलों में स्वस्थ, स्वच्छ, समृद्ध व संस्कारवान भारत निर्माण का अभियान तथा योग से वैयक्तिक व राष्ट्रीय चरित्र निर्माण आंदोलन चल रहा है। भारत में केन्द्र, राज्य, मण्डल, जिला एवं तहसील स्तरों पर पतंजलि योग समिति के लगभग सवा लाख से अधिक योग शिक्षक सार्वजनिक स्थानों जैसे-पार्क, धर्मशाला, मन्दिर, मस्जिद, विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय, कारागार, कारपोरेट जगत में योग प्रशिक्षण का कार्य कर रहे हैं।
- यू.के., यू.एस.ए., कनाडा, दुबई, पूर्वी अफ्रीका व दक्षिणी अफ्रीका आदि में पतंजलि योग समिति के तीन हजार तथा

यह सभी चित्र ''विश्व के गणमान्य लोग योग से जुड़े हैं'' से सम्बन्धित हैं।

पतंजलि योगपीठ में स्वामी जी के साथ ज्ञानदान-प्रदान करते भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति डा० ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

ब्रिटेन की स्वास्थ्य मंत्री सुश्री पेट्रीसिया हैविट स्वामी जी से प्राणायाम के विषय में जानकारी लेती हुई

ब्रिटेन के हाउस ऑफ कॉमन्स में योग शिक्षा प्रदान करते हुए स्वामी जी महाराज

न्यूयॉर्क में यू.एन.ओ. के स्टैण्ड अप कार्यक्रम के अन्तर्गत गरीबी हटाओ का आह्वान करते स्वामी जी महाराज

नेपाल में 5 हजार से अधिक योग शिक्षक योग प्रशिक्षण के कार्य में अहर्निश संलग्न हैं।

- भारत में योग शिक्षकों द्वारा प्रतिदिन पचास हजार से अधिक नियमित योग कक्षाएं।
- 6,38,365 गाँवों में एक-एक योग प्रशिक्षक तैयार कर स्वस्थ भारत व चरित्रवान् भारत का निर्माण कार्य पूरे पराक्रम के साथ चल रहा है। वर्ष 2009 के अन्त तक सम्पूर्ण **भारत को योगमय बनाने का संकल्प है।**

राष्ट्रपति भवन में महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवी पाटिल के साथ योगऋषि स्वामी रामदेव जी महाराज एवं आचार्य बालकृष्ण जी महाराज

टी.वी., अन्य इलैक्ट्रॉनिक माध्यमों (डी.वी.डी., वी.सी.डी. व एम.पी.३) व प्रिन्ट मीडिया के माध्यम से योग शिक्षा

विभिन्न टी.वी. चैनलों, अन्य इलैक्ट्रानिक माध्यमों जैसे-डी.वी डी., वी.सी.डी., तथा प्रिन्ट मीडिया आदि के माध्यम से विश्व के सौ करोड़ से अधिक लोग अप्रत्यक्ष रूप से स्वामीजी की योग विद्या का लाभ उठा रहे हैं। टीवी चैनलों पर प्रसारित होने वाले योगऋषि स्वामी रामदेव जी महाराज के योग सम्बन्धी कार्यक्रमों से करोड़ों लोग लाभान्वित हो रहे हैं।

अष्टवर्ग के पौधों की खोज-आयुर्वेद के क्षेत्र में एक नया आयाम

अष्टवर्ग में रिद्धि, वृद्धि, मेदा, महामेदा, काकोली, क्षीर काकोली, जीवक व ऋषभक पौधे आते हैं। ट्रस्ट के प्रयास से पूर्व तक केवल वृद्धि, मेदा, काकोली और जीवक पौधों को ही अष्टवर्ग समझा जाता था।

आचार्य बालकृष्ण जी के नेतृत्व में लुप्तप्राय, रिद्धि, महामेदा, क्षीर काकोली व ऋषभक पौधों की खोज हुई, जो आयुर्वेद के क्षेत्र में एक नया आयाम है।

बिहार में बाढ़ पीड़ितों की सहायतार्थ पतंजलि योगपीठ द्वारा स्थापित एक शिविर में ट्रस्ट के महामंत्री आचार्य बालकृष्ण जी महाराज

आपदा प्रबन्धन में सक्रिय भागीदारी

- दिसम्बर 2004 में सुनामी आपदा के कारण पीड़ित लोगों का बढ़-चढ़कर सहयोग किया तथा संस्था ने सहयोग के रूप में पचास लाख से भी अधिक रुपये की राशि पीड़ितों की सहायतार्थ प्रदान की।
- बिहार में शताब्दी की सबसे बड़ी बाढ़ त्रासदी के कारण पीड़ित लोगों की सहायतार्थ पतंजलि योगपीठ विश्व के सबसे बड़े एन.जी.ओ. के रूप में सामने आया।
- बाढ़ पीड़ित जिलों में 50 से भी अधिक स्थानों पर बाढ़ सहायता राहत कार्यों का निष्पादन, जहाँ प्रतिदिन लाखों लोगों को नि:शुल्क भोजन एवं वस्त्रों का वितरण हुआ।

सामाजिक कार्यों में बढ़-चढ़कर सहभागिता

- अनाथ एवं कुष्ठ रोगियों को भोजन, वस्त्रादि की व्यवस्था।
- अनाथ एवं निर्धन कन्याओं के विवाह में सहयोग।
- मेधावी छात्र/छात्राओं को छात्रवृत्ति।

मुम्बई के शहीदों का सम्मान

- पतंजलि योगपीठ ने देश की स्वतंत्रता के पश्चात् के इतिहास में देश पर हुए सबसे बड़े आतंकवादी हमले में शहीद हुए परिवारों के सदस्यों का दिल्ली में सार्वजनिक सम्मान किया।
- प्रत्येक शहीद परिवार को सम्मान राशि के रूप में पांच-पांच लाख रुपये की राशि भी भेंट की गई।

स्वामी जी द्वारा नई दिल्ली में मुम्बई हमले के शहीदों को श्रद्धांजलि एवं उनके परिवारजनों को सम्मानित किया गया

'माँ गंगा' राष्ट्रीय धरोहर घोषित

पतंजलि योगपीठ के अन्तर्गत योगऋषि स्वामी रामदेव जी के संयोजकत्व में 'गंगा रक्षा मंच' के आह्वान व प्रयास से केन्द्र सरकार ने भारतीय संस्कृति की प्रतीक 'माँ गंगा' को राष्ट्रीय धरोहर घोषित किया।

संस्था द्वारा संचालित अनुसंधान गतिविधियाँ

वर्तमान में पतंजलि विश्वविद्यालय की मातृ संस्था पतंजलि योगपीठ के माध्यम से सम्बंधित विभिन्न विभागों में योग, वनस्पति विज्ञान, आयुर्वेद, जैव प्रोद्यौगिकी, मनोविज्ञान सूक्ष्मजीव विज्ञान आदि विषयों में पी.एच.डी. उपाधिधारक उच्च प्रशिक्षित अनुसंधानकर्ता, चिकित्सक, वैज्ञानिक आदि कार्य कर रहे हैं। संस्थान में कार्यरत 10 से अधिक शोधार्थी विभिन्न विषयों जैसे योग, रसायन शास्त्र, आयुर्वेद, प्राच्य अध्ययन, सूक्ष्म जीव विज्ञान, मनोविज्ञान आदि में पी.एच.डी. शोध अध्ययन कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त संस्थान द्वारा उच्च शिक्षा एवं प्रशिक्षण हेतु मानव संसाधनों को विभिन्न ख्यातिलब्ध संस्थानों में प्रायोजित किया जाता है। जिसमें अब तक अनेकानेक लोग लाभान्वित हो चुके हैं। पतंजलि विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों में विश्वस्तरीय, अनुसंधान कार्य किये जा रहे हैं जिसके परिणाम स्वरूप हमारे गुणवत्तायुक्त शोध पत्र अन्तर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं में स्थान पा रहे हैं।

(क) अनुसंधान, खोज तथा प्रशिक्षण कार्यक्रम:

योग अनुसंधान एवं विकास विभाग द्वारा अब तक 15 शोधपत्र, आयुर्वेद अनुसंधान एवं विकास विभाग द्वारा 35 शोधपत्र, औषधीय उद्यान एवं कृषि अनुसंधान विभाग के 10 शोधपत्र, दर्शन एवं प्रकाशन विभाग द्वारा 2 शोध पत्र प्रकाशित हो चुके हैं। इसके अतिरिक्त 20 से अधिक शोध पत्र शीघ्र ही प्रकाशित होने वाले हैं। आयुर्वेद अनुसंधान एवं विकास विभाग तथा पतंजलि आयुर्वेद लिमिटेड की तरफ से आयुर्वेद, गौमूत्र, घनसत्व निर्माण प्रक्रिया आदि क्षेत्रों में किये गये नवीन अनुसंधान कार्यो के 15 पेटेंट फाईल किये गये हैं। जिसमें से 3 पेटेंट प्रकाशित हो चुके हैं। संस्थान अष्टवर्ग एवं संजीवनी जैसी जीवनीय औषधियों के खोज की अनुसंधान परियोजना पर कार्यरत है। जिसमें अष्टवर्ग की औषधियों के खोज के साथ-साथ संजीवनी की पहचान से सम्बन्धित प्रारम्भिक सफलता प्राप्त कर ली गयी है। संस्थान संजीवनी की पुष्टि से सम्बन्धित शोध कार्य पर सतत् क्रियाशील है। संस्थान की अत्याधुनिक अनुसंधान सुविधाओं से युक्त योग अनुसंधान प्रयोगशाला एवं आयुर्वेद अनुसंधान प्रयोगशाला में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, वन अनुसंधान संस्थान सहित विभिन्न ख्यातिलब्ध विश्वविद्यालयों से बी० फार्मा, एम०एस०सी०, एम०डी०, एम० फार्मा आदि के छात्रों को नि:शुल्क प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है। औषधीय उद्यान एवं कृषि अनुसंधान विभाग छात्रों को प्रशिक्षण के अतिरिक्त कृषकों हेतु प्रशिक्षण कायक्रमों का आयोजन करता है, जिसमें कृषि आधारित नवीन तकनीकि एवं व्यवसायीकरण की जानकारी प्रदान की जाती है। हिमाचल प्रदेश, उत्तराखण्ड, छत्तीसगढ़ आदि राज्यों की सरकारें उक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम हेतु अपने कृषकों एवं वैज्ञानिकों को समय-समय पर भेजती है।

(ख) विश्व भैषज संहिता:

संस्थान के अनुसंधान विभाग द्वारा विश्व के लगभग सभी देशों में प्रयोग की जाने वाली 5 हजार से अधिक वानस्पतिक औषधियों के चित्र एवं प्रयोगों सहित विवरण तथा आधुनिक विज्ञान सम्मत विश्लेषणों सहित विश्व के प्रथम एवं अनुपम विश्व भैषज संहिता का संकलन किया जा रहा है, जो आयुर्वेद जगत के मुख्य शोध संदर्भ ग्रन्थ के रूप में स्थापित होगा।

(ग) आर्ष निघण्टु:

प्राचीन आयुर्वेद के ग्रन्थों में वर्णित जड़ी-बूटियों का प्रयोग श्लोक सहित प्रमाणिकता के साथ एक ही स्थान पर संग्रहीत किया जा रहा है। आयुर्वेद की परम्परा में यह ग्रन्थ अति महत्त्वपूर्ण होगा।

(घ) व्यवसायिक एवं व्यवहारिक प्रशिक्षण:

विश्वविद्यालय के शिक्षण कार्यों के सहयोग हेतु ऋषियों के प्राचीन ज्ञान एवं अत्याधुनिक पद्धति के समन्वय से उच्च गुणवत्ता युक्त आयुर्वेदिक औषधियों के निर्माण एवं विकास के लिए निर्माण ईकाइयों, दिव्य फार्मेसी, पतंजलि आयुर्वेद लिमिटेड एवं पतंजलि फूॅड एवं हर्बल पार्क लिमिटेड की स्थापना की गयी है। जिसमें वर्तमान में आयुर्वेद, विज्ञान, कृषि आदि के व्यवसायिक एवं शोध छात्रों को प्रशिक्षण भी दिया जा रहा है। संस्थान में प्रतिदिन विभिन्न शिक्षण एवं शोध संस्थानों के छात्र, शिक्षक, अनुसंधानकर्ता दर्शनार्थी के रूप में आकर संस्थान के अनुसंधान कार्यो से लाभान्वित होते हैं।

(ड.) विभिन्न संस्थानों व विश्वविद्यालयों के साथ अनुसंधन एवं प्रशिक्षण कार्य में सहभागिता:

संस्था, अनेक राष्ट्रीय एवं अर्न्तराष्ट्रीय अनुसंधान संस्थानों जैसे-राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान, चौधरी चरणसिंह विश्वविद्यालय मेरठ, देव संस्कृति विश्वविद्यालय, बी०ई०जी० एण्ड सी रूड़की, भारतीय प्रोद्योगिकी संस्थान रूड़की, डी०एस०आई०आर०, केन्द्रीय योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा अनुसंधान परिषद्, सामाजिक विज्ञान अनुसंधान फाउन्डेशन, नेपाल, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय आदि के सहसंयोजन में विभिन्न शोध परियोजनाओं पर कार्य कर रही है।

(च) चिकित्सकों एवं वैज्ञानिकों हेतु पुनर्बोधप्रशिक्षण कार्यक्रम का संचालन:

संस्थान द्वारा सतत् रूप से आयुर्वेद चिकित्सकों हेतु पुनर्बोध प्रशिक्षण कार्यक्रम का संचालन किया जा रहा है जिसके द्वारा अब तक 5000 से अधिक आयुर्वेद चिकित्सकों एवं छात्रों को प्रशिक्षित किया जा चुका है जो देश के विभिन्न प्रान्तीय सरकारों द्वारा संचालित चिकित्सालयों में चिकित्सक के रूप में सेवायें प्रदान कर रहे हैं। संस्था द्वारा देश-विदेश में संचालित हजार से अधिक चिकित्सालयों में भी लगभग एक हजार चिकित्सक सेवायें दे रहे हैं।

इस प्रकार पतंजलि विश्वविद्यालय से सम्बन्धित विभिन्न प्रतिष्ठान एवं विभाग शिक्षण, प्रशिक्षण एवं अनुसंधान कार्य में सतत् संलग्न हैं।

MESSAGE FROM CHANCELLOR

India has been the leading country in the world in knowledge, wisdom, literature, music, art and culture from the very beginning. Travellers/visitors from many countries visited India from time to time to gain knowledge of its religion, philosophy, literature, medicine, astronomy, astrology and mathematics from its sacred texts. Up to the 18th century India had been an ideal country of the world in educational, economic, social and spiritual field. In the 18th century, our partnership in the world market was 37% and our income was 27% of the total income of the world. The literacy in the country was 97% according to the famous German scholar Max Muller, English scholar W. Litner and the then British Government. The number of primary and secondary Gurukuls was 7 lac 32 thousand. The centres of higher learning were 14 thousand where 18 subjects including astronomy, astrophysics, physics, chemistry, geology, metallurgy, philosophy, surgery, medical science and management were taught.

The British rulers having a hidden agenda to keep us enslaved for centuries tried to destroy our rich and prestigious educational system totally. Today, there are 450 universities, 13 lac primary and secondary schools, 15 thousand colleges in the country.

Many institutes of international level in the field of science, management and technology exist in the country but we could not fully include our sacraments and culture in these institutions of high standard of education. We want to make our culture, sacraments, history, yoga, meditation, restraint), and morality (good conduct) a part and parcel of our educational system, for realizing the great potential of our children, and for developing in them a sense of pride for their sacraments and culture. We want to make the child a successful and ideal man of the world. Graduates of our institution shall be competent enough to create jobs for themselves as well as for others, and to make the society self-dependent in health-care. They shall be able to re-establish Vedic Rishi Culture (Gurukul System) of education. We want to establish a highly ideal educational system through the University of Patanjali.

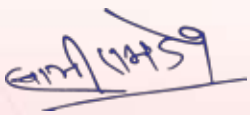

MESSAGE FROM VICE- CHANCELLOR

Day by day devaluation of our cultural values and educational system cannot be considered good. For finding a solution to this deplorable situation, we want to revolutionize the educational system. Instead of increasing the number of educated unemployed youths, we want to prepare such young men and women who, with their education, bring a revolution in the society and nation, and make their important contribution in the development of the nation.

The masses mired in sickness and disease are making the nation dependent in the matter of health-care. We want to save the people of the country from loot and atrocity in the name of treatment of diseases. We want to stop the economic misuse of lakhs and crores of rupees in the name of health services. Yoga and Ayurveda are our cheap, simple, easy, permanent, scientific, faultless and complete systems of treatment.

We want to establish Yoga and Ayurveda as our national system of treatment, and to fulfil this objective, we want to produce competent and proficient scholars of Yoga and Ayurveda in our University of Patanjali.

Through the University of Patanjali we want to create a new era by revolutionizing education and health-care. We want to produce such graduates who being self- dependent themselves shall create opportunities of employment and self-reliance for others in the field of health-care, and who shall make their important contribution in making India healthy, rich and cultured by removing sickness, unemployment, poverty, hunger and want. This university will be a leading institution in the world in the field of Yoga, health, culture, tourism, science, technology and panchkarma,- this is our goal. The university will prove the scientific validity of Yoga, will co-ordinate Ayurveda, Naturopathy and other systems of ancient treatment, will develop a joint system of treatment, and will make the students self-reliant. Knowledge, wisdom, knowledge of the Supreme Soul and knowledge of materialism are our rich, perennial Vedic heritage. In the first instance arrangements have been made to provide diploma courses based on Yoga and Panchkarma. Other courses will be started later. My good wishes for the bright future of students.

Acharya Bal Krishna

OUR GLORIOUS PILLARS

Swami Ramdevji Maharaj

A man who is endowed with the valour and prowess of a warrior, the penance of siddhas, the metaphysical and spiritual knowledge of seers, the simplicity of saints, the stable intellect and non- attachment of yogis, the innocent smile of a child, the tenderness and affection of a mother, the strictness of a father, the rational and pure intellect of a scientist, a scholarly acharya of the Gurukul tradition, a humble seeker, a great ascetic, a man of action and renunciation,-- this is Revered Yogarsi Swami Ramadevji Maharaj who is devoted round the clock to the welfare of the world. The patience of Mother Earth, the radiance of Fire, the speed of Wind, the coolness of Water, and the vastness of Space, these are the ideals of his life. The objective of his life is to believe in the supremacy of the power of Guru and the power of God, to worship the Nation-deity through disciplined hard work, and to discharge his righteous actions and duties with complete dedication, competence, unsparing endeavour and enterprise (aggressiveness). His work philosophy is to stay cool and devoid of any arrogance, by accepting that the knowledge, prosperity, success, accomplishments, affluence and glory - all these achievements of his life are by the grace of Guru and God. To him goes the credit of taking yoga to each home and to establish it on the world map in a big way. He is the driving force behind the mass movement of good health through yoga, and of building up character and leadership through Bharat Svabhiman (Trust).

Revered Yogarsi Swami Ramdevji Maharaj is the founder chairman of Divya Yog Mandir (Trust), Patanjali Yogpeeth (Trust) and Bharat Svabhiman (Trust).

Wide recognition / honour to the work done by Swamiji Maharaj

- In June 2007 Swamiji gave a call to the people of the world for Poverty Removal under the STAND UP Program in New York, at the invitation of UN Secretary General.
- Yogarsi Swami Ramdevji Maharaj was felicitated by Nassau County, New York, and 30 June 2007 was celebrated as Swami Ramdev Day in Nassau County.
- Swamiji was felicitated by the Senate and General Assembly of New Jersey.

- Swamiji was felicitated in the House of Commons of British Parliament.
- Honorary doctorate was conferred on Swamiji by K.I.I.T.Bhubaneswar.
- Berhampore University conferred honorary doctorate on Swamiji.
- Swamiji finds a place in the list of the most towering, influential and powerful personalities of the country prepared by INDIA TODAY for the last two years and other leading magazines in the country.
- Global Knowledge Millennium Honour conferred on Swamiji Maharaj by ASSOCHAM.
- Honorary doctorate was conferred on Swamiji by Graphic Era University.
- Degree of Mahamahopadhyay was conferred on Swamiji by Rashtriya Sanskrit Vishwavidhyalaya, Tirupati, Andhra Pradesh.
- Honorary doctorate was conferred on Swamiji by D.Y. Patil Vidhyapeeth, Pune.

Vaidyaraj Acharya Balkrishna

Trained and educated in the Gurukul tradition since early childhood, Revered Acharya Balkrishnaji Maharaj, a great man of action (karmayogi), is a versatile genius and mufti- faceted personality. He is the great visionary creator and architect to give concrete shape to the whole mission of Patanjali Yogpeeth and to realize the dreams and concepts of Revered Yogarsi Swami Ramdevji Maharaj.

Despite being educated in the Gurukul tradition, the revered Acharya excels with his knowledge and experience in the managerial, administrative and engineering fields so much so that the leading personalities of foreign countries in different fields look up to him with respect to learn some thing from him. He is a brilliant exponent and strong supporter of the eternal tradition of Ayurveda established by the great sages like Caraka, Susruta, Dhanvantari, and others. At present the credit of propagating and establishing Ayurveda on: the world map with scientific evidence in a big way goes proudly to him. Revered Acharya Balkrishna has directly treated more than 5 lakh patients suffering from various diseases. Under his guidance, almost one thousand vaidyas are providing their services in several countries and all the activities and projects of the Institute ire efficiently managed under his direction and guidance. He is the General Secretary of Divya Yog Mandir (Trust) Patanjali Yogpeeth (Trust), Bharat Svabhiman (Trust), Chairman of YOG SADHANA, A Divya Yog Mandir (Trust) Publication, Chief Editor of YOG SANDESH; and Chief Managing Director of Patanjali Ayurved Ltd. and Patanjali Food and Herbal Park.

OBJECTIVES OF THE UNIVERSITY OF PATANJALI

The objectives for which the University of Patanjali has been founded are as follows:

1. To establish a systematic and world standard educational facility for the comprehensive study, teaching and intensive research, in the modern scientific perspective, of the original metaphysical values propounded by our ancient sages and seers.
2. To make available a job-oriented system of education by awakening the yough about national ethos, patriotism, swadeshi food and drink, purity of food, herbs and the preservation and promotion of Ayurveda.
3. To provide graduate and post-graduate courses based on all ancient genres like Vedas, VedāÄgas (limbs of Vedic learning) etc. including yoga and Ayurveda. Also, for fulfilling the objectives of the University, to start short-duration diploma and certificate courses.
4. To establish research and development centers for encouraging research and fresh approach in the field of Indian culture, Yoga and Ayurveda, and through them;
    a. To provide teaching and training in such allied branches of knowledge, as deemed necessary;
    b. To provide research facilities for the propagation of knowledge in schools so that research work in these genres may get global recognition and employment may be easily available to the students;
    c. To start Yoga and Ayurveda studies and such activities which may bring the benefits of Yoga and Ayurveda to the common man, leading to the building up of a disease-free, healthy and prosperous society and to the development of national thinking.

OUR MAIN ACTION-PLAN ON THE YOGA AND AYURVEDA-ORIENTED KNOWLEDGE

A. In modern times, millions of our countrymen and people all the world over are facing a major health crisis due to rising pollution, stress, chaotic lifestyle and lack of physical work. Food, air and water, the main sources of life, have become highly toxic. Therefore, there is a menace to the life of millions of people from dangerous diseases like cancer, TB, asthma, allergy, obesity, diabeties, heart ailments, hypertension, etc. All sorts of medical systems have achieved only partial success in the treatment of people. Therefore, we wish to give the whole world an inexpensive, simple, natural, scientific and efficacious alternative in medicine, viz. Yoga and Ayurveda. Our aim is to prepare a high level syllabus based on the education of Yoga and Ayurveda and to give such talented persons to our country and the world community which may emancipate the world from the crisis of health and culture, and build up a healthy, happy, prosperous and cultured world.

B. To make facilities available for certificate, diploma, graduate degree, postgraduate degree and the most advanced modern scientific research based on Yoga and Ayurveda.

C. We will, on one hand touch our students the knowledge of Yoga and Ayurveda inherited from the ancient seers; on the other, we will test their Vadic knowledge in the light of modern science in latest science research centres, will create in them a confidence in its authenticity and scientific validity, and will prepare them for establishing a new type of medical system.

D. Our students will not have to go from door to door in search of employment. First, we will prepare a nation-wide and world-wide action plan during their study period for their appointment in the best educational and health institutions in the country and in the world. Secondly, our students will themselves be an institution. They will work for a comprehensive action plan and concept to establish Yoga and Ayurveda as our national system of medicine. For this, a number of options will be open to them.

E. Following are the action plans in respect of the future of our graduates:

i. To prepare a very big structure for jobs in the educational and health institutions of our country and the world.

ii. To expand comprehensively panchkarma, shatkarma and other Ayurvedic procedures in the Patanjali Chikitsalayas run by Patanjali Yogpeeth, and to appoint vaidyas and yogacharyas in them.

iii. We shall teach and train our students in a way that instead of earning livelihood through the employments created by others, they will set up their own institutions or centres of Yoga and Ayurveda, and will create new employment opportunities for themselves as well as for others, and Patanjali Yogpeeth will extend its cooperation in this process of making them self reliant. Employment is not a big question to us. The challenge before us is to make good health available to millions of people in the country. Along with making our students self-reliant, we will make the country self-reliant and self-dependent in matters of health, and will make an excellent health alternative available to millions of people in our country.

SALIENT FEATURES OF THE UNIVERSITY OF PATANJALI

- The University of Patanjali is located at Haridwar, the birthplace of culture and civilization and the hallowed precincts of penance and asceticism of sages and seers, in the lap of nature free from pollution and din and noise. Male/ Female students can develop all round personality on the cordial atmosphere of this place.
- At present the University mainly imparts education in Yoga and Ayurveda. Here special attention is given to Yoga practice, restraint, good conduct, vegetarianism, culture and refinement, alongside education.
- Girls and boys studying Ayurveda have a science background whereas the traditional knowledge of Ayurveda contained in the treatises of Charak, Sushrut, Dhanvantari and other ancient texts is in Sanskrit language. These texts cannot be properly understood unless girls and boys have knowledge of Sanskrit. Special arrangements for teaching Sanskrit to such boys and girls have been made in the University.
- The lecturers and managers of the University are persons who are efficient, competent, addiction-free and dedicated to the good of society, nation, culture and humanity.
- Male/ Female students from 15 states are studying at present in the university. All the students get due care and guidance irrespective of their caste (class), language, state, sect, etc, in accordance with the noble sentiment of "vasudhaiva ku¢umbakam" (the whole world is our family). Humanitarian qualities like mutual co-operation, harmony, etiquette, etc. are developed in all girls and boys.
- Every effort is made to develop in all boys and girls a sincerity and sense of duty toward their culture, civilization, nation and humanity.
- Efforts are made to develop sacred and kindred relations between the teacher and the taught in keeping

with the Gurukul tradition. Teachers are always endeavouring for the good of girls and boys by giving them parental love and affection. Boys and girls also give full respect to their teachers.

- Service projects have been designed with a view to developing among girls and boys qualities like the sense of service, efficiency, tenacity, self-reliance, etc. This comprises works like cleaning, gardening, social service by organizing comps in the vicinity, etc.
- Pure, nutritious and seasonal food is served to the students in the university. Food and fruit suitable for various festivals and occasions are also arranged.
- Hostel accommodation is available for students. Boys and girls are provided residential facility in separate hostels according to their affordability.
- Students in the University of Patanjali are daily made to practice yogāsana, prāṇāyāma, meditation, etc., which keeps them healthy and cheerful.
- If any student falls sick once in a while, proper facilities for his/ her treatment in the O.P.D./ I.P.D. are available in the yogpeeth campus. Besides, facilities for all sorts of clinical tests are available on the campus for pathology, radiology, cardiology, etc. with ultramodern machines, along with panchkarma and shatkarma procedures.
- The University library contains 15,900 books on ancient Aryan literature, modern science and technology. A number of newspapers and magazines are subscribed for the reading room. Internet facility is also available in the library. Books are also loaned to students to the extent possible.
- Festivals and days of social and national importance like Holi, Dipawali, Makar Sankranti, Rakshabandhan, Independence Day, Republic Day, etc. are celebrated on the university campus with a lot of jubilation. Every effort is made to initiate boys and girls into the practical knowledge of 16 sacraments (saṁskāras).
- Poor and meritorious students are accorded priority in admission, and assistance is given to them in every possible way.
- Students are especially taught by specialists to converse in Sanskrit.
- With a view to enhancing the knowledge of students and awakening in them a sense of sincere attachment and pride for their glorious history, culture and civilization, they are taken on trips to various religious places and educational, historical and technological institution.
- Arrangements have been made for special enlightening address to student from leading saints, sages, scholars and intellectuals of the country under the direction of yogarsi Swami Ramdevji Maharaj.
- Articles of daily use can be bought from the sale outlet of the university.
- Branches of Punjab National Bank and State Bank of India are also situated with in the premises along with A.T.M.
- An office of travel agent is also established for the convenience of students/ guardians and visitors.

Campus of the UNIVERSITY OF PATANJALI

The Campus of the University of Patanjali is under construction. At present its camp office is situated in Patanjali Yogpeeth; Patanjali Yogpeeth is situated on Delhi-Haridwar National Highway 17 km south of Haridwar and 13 km north of Roorkee.

Courses proposed for the academic year 2010-11

The following courses are proposed to be started in the academic year 2010-11.

1. B.A. (with Yoga Science)
2. M.A./ M.Sc (Yoga Science)
3. P.G. Diploma in Panchkarma
4. P.G. Diploma in Yoga Science
5. P.G. Diploma in Yoga Health and Cultural Tourism.

Rules of Admission
B.A. (with Yoga Science)

This course shall extend over a period of three years divided in six semesters. Three subjects will be taught in B.A. Yoga shall be a compulsory subject. Besides yoga, these will be two more subjects of study.

Qualification for Admission- For admission 10+2 passed with a minimum of 50% marks in aggregate.

Maximum age- 25 years on 1st August 2010.

Admission will be based on Merit/ Interview.

A semester will be of six months' duration. Teaching will be in theory and practical (wherever necessary).

Fees- Tuition fee for one year will be Rs 15000/- which may be paid on 50% basis in each semester.

M.A. (Yoga Science)

Duration of the course will be two years divided into 4 semesters.

Qualification for Admission - Passed Bachelor's degree (10+2+3) with a minimum of 50% marks from a recognised University.

Maximum age- 30 years on 1st August 2010.

Admission will be based on Merit/ Interview.

Teaching in this course will be theory and practical.

Fees- Annual tuition fee will be Rs. 20000/- payable 50% in each semester.

M.Sc (Yoga Science)

Duration of the course will be two years divided into 4 semesters.

Qualification for Admission- Passed Bachelor's degree in Science (10+2+3) with a minimum of 50% marks from a recognised University.

Maximum age- 30 years on 1st August 2010.

Admission will be based on Merit/ Interview.

Teaching in this course will be theory and practical.

Fees- Annual tuition fee will be Rs. 20000/- payable 50% in each semester.

P.G. Diploma in Panchkarma

Qualification for Admission- Bachelor's degree in Ayurveda from a recognised University with 60% marks.

The Course of study extends over a period of one year divided into two semesters. The course will be in theory and practical both.

Annual tuition fees will be Rs. 35000/- divided in two parts. The payment may be made in each semester.

Maximum age- 35 years on 1st August 2010.

P.G. Diploma in Yoga Science

Qualification for Admission- Bachelor's degree (10+2+3) from a recognised University with 50% marks.

The course of study shall extend over a period of one year divided into two semesters. Teaching will be in theory and practical.

Annual tuition fee will be Rs. 20000/- divided in two parts. Payment may be made in each semester.

Maximum age- 35 years on 1st August 2010.

P.G. Diploma in Yoga Health and Cultural Tourism.

Qualification for Admission- Bachelor's degree (10+2+3) from a recognised University with 50% marks.

The course of study shall extend over a period of one year divided into two semesters. Teaching will be in theory and practical.

Annual tuition fee will be Rs. 20000/- divided in two parts. Payment may be made per semester.

Maximum age- 35 years on 1st August 2010.

Dress for Students

Students have to wear white dress in yoga practical and in other classes.

Hostel

As far as possible facility of hostel will be provided to every student where mess facility will also be available. It is expected that every student will maintain discipline in the hostel and follow the rules and instructions.

Fees for Hostel

1. Fee for Residence- Rs 1000/- per month.
2. Fee for Food- Rs 1800/- per month.

How to pay?

All payments will be made by draft payable to the University of Patanjali, at Haridwar.

Form and Prospectus for Admission- Application form and prospectus can be received by depositing Bank Draft of Rs 100/- payable to the University of Patanjali, at Haridwar (Demand by post Rs 50/- extra as postal charges). Last date for receiving prospectus is 15 July 2010. Send a self - addressed envelope of

11"×9" with draft. The last date for submitting the filled form is 15 July 2010. The address of receiving and depositing form is:

Prof. Ram Kumar Sharma
Officer on Special Duty
University of Patanjali,
Patanjali Yogpeeth,
Delhi-Haridwar National Highway,
Haridwar- 249402 (Uttarakhand)
Phone no. (10 AM- 5 PM)- 01334-242526
E-mail: uopyp2009@gmail.com

Other Important Dates

1.	**Application Form:**		
	(a) Last date for receiving	-	15 July 2010
	(b) Last date for depositing	-	15 July 2010
2.	**Dispatch of letter of Qualified Candidates**	-	20 July 2010
3.	**(a) Interview of Candidates**	-	28, 29 July 2010
	(b) Registration of selected Candidates	-	28, 29 July 2010
	(c) Allotment of rooms in the hostel	-	28, 29 July 2010
4.	**Invocation of students**	-	4 August 2010
5.	**Start of Classes**	-	5 August 2010

Note:-

1. 6% seats in every subject will be arbitrary of the Vice- Chancellor.
2. Selection will be based on marks obtained in various exams and Interview.

CHIEF NATIONAL INSTITUTION OF UNIVERSITY

Divya Yog Mandir (Trust)

Kripalu Bagh Ashram, Kankhal

Revered Swami Kripalu Devji Maharaj, a Brahman absorbed, austere and assiduous ascetic of amazing genius, founded in 1932 Vishva Gyan Mandir, later known as Kripalu Bagh, at the sacred land of Haridwar on the bank of the holy Ganga. Kripalu Bagh Ashram was the place of refuge for freedom fighters like Ras Behari Bose and others during the Freedom Movement. On 5 January 1995, Revered Yogarishi Swami Ramdevji Maharaj and Revered Acharya Balkrishna Maharaj collaborated under the blessed patronage of Revered Swami Shankardevji Maharaj to found Divya Yog Mandir (Trust) in this Ashram and launched upon their social service mission. At present, Kripalu Bagh Ashram, a branch of Divya Pharmacy and a Sale Outlet are functioning here. Currently Divya Yog Mandir (Trust) is running all the Ayurvedic services.

Patanjali Yogpeeth (Trust)

Patanjali Yogpeeth (Trust) was founded in Delhi on 4 February, 2005 with the blessings and inspiration of Yogarisi Swami Ramdevji Maharaj for the purpose of establishing Yoga on the world map, for the study and ancient research of the Vedic tradition of Yoga, and for conducting the whole gamut of activities and various projects related to Yoga. The Trust manages almost all the Yoga activities, such as holding Yogic science camps and management of Patanjali Yog Samitis. It is the topmost priority of Pantanjali Yogpeeth (Trust) that a relevant syllabus related to Yoga is prepared to make it a compulsory subject in the curriculum and it is introduced at the school, college and university level.

Bharat Svabhiman (Trust)

In order to establish India as an ideal spiritual country and in turn world's superpower by rendering health facilities to last man of the country through indigenous treatment systems of Yoga, Ayurveda and Naturopathy, pondering education & sacraments to Indian children in Indian languages to transform education system to entirely Indian one, eradicating corruption and removing economical dis-balances, sharing all national resources for all countrymen equally, proper water management, eliminating unemployment, poverty and hunger, industrialising agronomy, protecting environment and make the same clean, putting a check on rapidly growing population & safeguarding Indian culture and spiritual values, Bharat Svabhiman (Trust) was founded on January 5, 2009.

INTERNATIONAL

Patanjali Yogpeeth (UK) Trust Patanjali Yog Foundation (Trust), USA, Patanjali Yogpeeth (Trust), Canada and Patanjali Yogpeeth (Trust), Kathmandu, Nepal have been founded for the propagation and implementation of the philosophy and aims and objective of Patanjali Yogpeeth and Yogarishi Swami Ramdevji Maharaj. All these Trusts are devoted day and night to the propagation and implementation of the noble and sublime aspects of Indian culture the philosophy and teachings of vedas, Upanisads, etc. along with Yoga and Ayurveda. Grand headquarters of Patanjali Yogpeeth (UK) on the little cumbrae Island of Scotland and of Patanjali Yog Foundation (USA) in Houston are being established.

Introduction of Patanjali Yogpeeth and its walefare work

Patanjali Yogpeeth - Phase-I

- Inauguration of Patanjali Yogpeeth - Phase I by the Vice - President of India on 6 April, 2006 in the distinguished presence of 17 Chief Ministers and the Governor.
- Facilities available for free medical consultation to 6, 000 -10,000 patients in the Yoga and Ayurveda O.P.D.
- Facilities available for test investigations of pathology, radiology, cardiology, etc. by ultra - modern machines, along with pancakarma and satkarma.
- Yog Research Department equipped with the latest machines for establishing Yoga on the criteria of modern medicine.
- Free Yoga classes by Yoga teachers (each for 1-hour duration).
- Free Ayurveda and Yoga therapeutic consultation by well - trained vaidyas.
- An elegant yajana is performed daily on vedic and scientific tradition.
- Pancakarma-chkitsa, Satkarma chkitsa, salya (surgical) chkitsa eksara - sutra, karnabhedana, agnikarma, etc), dental and eye treatment services under Ayurveda available at the lowest cost.
- High quality Ayurvedic medicines manufactured

Patanjali Yogpeeth-Phase-I

Patanjali Pathological Laboratory and Research Centre

by Divya Pharmacy are available at the lowest price.

- Book of Institution VCD/DVD, MP3 , Audio CD are also available.
- Arrangement of AC and Ordinary accommodation at minimum charges in I.P.D./ guest house, along with daily yajna and yoga classes.
- Nice facilities of library and reading room, along with a cyber cafe, are available.
- All types of pure sattvika food and sweets cooked in pure desi ghee/oil available at fair prices in Annapurna (Food Court).
- Arrangement of making available medicinal plants and a walk through the Divya Herbal Park located near Patanjali Yogpeeth.
- Provision of huge parking facility and cloak room in Patanjali Yogpeeth.

Patanjali Yogpeeth - Phase II

- A huge air conditioned auditorium of 60,000 sq. ft. has been constructed Where thousand of participants will be able to practise together Yoga, Paranayam, Meditation etc.
- A bigger auditorium of 2,00,000 sq. ft. is under constructions, where thousands of participants will be able to practise together Yoga, Pranayam, Meditation etc.
- A huge Pancakarma and satkarma centre of 44,000 sq. ft where about 1000 persons could be benefited daily pancakarma and satkarma therapy.
- 950 rooms for visitors with AC and Non - AC accommodation.
- A free - of - charge hospice (dharmashala) to accommodate 1000 persons.
- A huge langar hall of 20,000 sq. ft. where visitors could partake of free meals (prasad)
- A huge Annapurna (Food Court) to cater to 5000 visitors daily.
- 350 apartments for accommodating healthy, competent and dedicated senior citizens under vanaprastha asrama.
- A grand museum built upon 50,000 sq. ft.
- A sale outlet of 11,000 sq. ft. for literature and material related to Yoga, Ayurveda and Oriental genres.

- Bharat Mata Naman Sthal where the sacred soil collected from more than 600 districts of India has been preserved.
- Construction of Central Office of Bharat Swabhiman is under process.

Patanjali Chikitsalayas

One thousand skilled vaidyas are giving free consultation in about one thousand Patanjali chikitsalayas in our country and abroad.

Yog Gram

An eco-friendly 'Yog Gram', equipped with modern amenities ,has been built up amidst breathtaking beauty of Nature where participants will be able to avail themselves of the benefits of Yoga, meditation, pancakarma and satkarma for long hours. Alongside complete Nature Cure facilities are available here.

An elegant scenery of Yog Gram stituated in the lap of nature

Patanjali Gau Science and Herbal Agricultural Research Institution :

There are two branches of Institution, Patanjali Gau Science and Herbal Agricultural Research Institution. One of them is in Haridwar and other is situated in Uttarkashi. The following activities are Performed under it.

Gaushala

Two gaushalas (cowsheds) have been constructed under Patanjali Yogpeeth in which high breed Haryanvi, Sahiwal and Gujrati cows are being reared. 60 cows are being reared in a gaushala near Patanjali Yogpeeth and about 100 cows in Shantarshah village, 2 kms away from Patanjali Yogpeeth .The pancagavya (five cow products) obtained from them is used in the medicines manufactured in the Pharmacy.

Gaushala in Patanjali Yogpeeth

Patanjali Herbal Park

In Patanjali Herbal Park, medicinal plants are grown and scientific research is done on them. Green house, poly house and glass house have been provided in the garden for this purpose. With a view to saving the rare medicinal plants found in Himachal Pradesh and other parts of the country, and for the purpose of making them available for research work and treatment, they have been sown/ planted in the Park, and their breeding is looked after. At present, species of 450 medicinal plants are available here.

Patanjali Herbal Park

Organic Agriculture

Organic farming of traditional crops and medicinal plants is being done on a large scale with advanced techniques by Patanjali Yogpeeth. Fertilizer is made from cow-dung by Burmese compost process. The bye products obtained from the manufacture of medicines in Divya Pharmacy are converted into high grade compost by NEDAP process which is utilized here in agriculture.

NEDAP Process of making compost

Gangotri Sadhana Kendra

A branch of the Institute is located at Gangotri amidst the lofty mountain ranges of the Himalayas where the seekers meditate upon God in the lap of Mother Nature.

Patanjali Yog Samiti

More than 600 Patanjali Yog Samitis at Centre, State, Division, District, Block and Village levels are devoted to teaching Yoga.

Divya Prakashan

High standard books are published by Divya Prakashan in Hindi, English and other main Indian languages dealing with the aims and objectives, philosophy and activities of the Yogpeeth as well as the oriental genres like Yoga, Ayurveda, culture, Refinements, patriotism, herbs and medicinal plants, panchagavya, etc. Yog Its Philosophy and Practice, Pranayam Its Philosophy and Practice, Yogadarsan, Gitamrta, Bhakti Gitanjali authored by Yogarishi Swami Ramdevji Maharaj; and Ayurved Its Principles and Philosophies, Secrets of Indian Herbs for Good Health, Yog in Synergy with Medical Science and Aushadh Darshan are the main books published by Divya Prakashan, which have been read by crores of people.

Different books & VCD of Divya Prakashan

Divya Yog Sadhana

The manufacturing and distribution of audio - video materials like DVD,VCD,MP-3 and cassettes in Hindi, English and main Indian languages, regarding Yoga, Ayurveda, culture, Refinement rituals and Bhajans, is handled by Divya Yog Sadhana. The manufacturing of more than one hundred DVD, VCD and audio cassettes of the devotional songs sung by Yogarishi Swami Ramdevji Maharaj and of the topics related to Yoga and Ayurveda has been handled by Divya Yog Sadhana, of which the CD's on Yoga Therapy for various diseases suggested by Swamiji Maharaj and Bhakti Gitanjali and Rastra Vandana sung by him are quite important.

Yog Sandesh

The monthly magazine YOG SANDESH containing articles on Yoga, Ayurveda, Culture, Refinement and Spirituality is published in Hindi, English, Gujrati, Marathi, Punjabi, Bengali, Oriya, Assamese, Nepali, Kannada and Telugu. It has a monthly readership of more than a million in India and abroad.

Divya Pharmacy

A huge structure of Divya Pharmacy has been erected to manufacture high quality Ayurvedic medicines by combining the ancient knowledge of sages and seers and the latest scientific techniques. This unit is certified ISO 9001 2000, ISO 9001: 14001,18001,WHO, GMP, GLP, and is one of the biggest Ayurvedic pharmaceutical units in the country.

Divya Pharmacy, A-1, Industrial Area, Haridwar

Patanjali Ayurved Ltd., D-38, Industrial Area, Haridwar

Patanjali Ayurved Ltd.

Patanjali Ayurveda Ltd. situated in the Industrial Area of Haridwar, is an industrial unit equipped with ultra - modern machinery. This industrial unit has been set up for manufacturing pure high quality, scientifically developed minerals and vegetable products. With a view to establishing Ayurveda on a scientific basis, Revered Acharya Balkrishnaji Maharaj, at the instance of Revered Yogarishi Swami Ramdevji Maharaj, founded Patanjali Ayurved Ltd. in the year 2006, by combining ancient knowledge with ultra - modern technology.This unit has obtained ISO 9001, ISO 1800, WHO, GMP, GLP, etc. certifications for ultra - modern services and resources.

Patanjali Food and Herbal Park Ltd.

For the purpose of bringing about agricultural revolution, after the Yoga revolution, in the country, the biggest Food and Herbal Park in the world is being constructed in village Padartha of Haridwar district with the co - operation of the ministry of food processing Industry, Govt. of India, under the inspiration and guidance of Yogarishii Swami Ramdevji Maharaj and Acharya Balkrishnaji Maharaj. After the completion of this Park at the cost of approximately 500 crore rupees, the farmers will get a reasonable price for their produce, and the economy of the country and the farmers will be strengthened. This Food Park will create direct and indirect employment for about 15000 persons.

Patanjali Food & Herbal Park to be developed at Padartha village, Haridwar

Running a big Gurukul at Kishangarh Ghaseda for teaching modern & Oriental subjects with an integrated development of student from India and abroad in Gurukul atmosphere.

Ayurveda University -

Patanjali Ayurscience and Research Institution is established under the Divya Yog Mandir (Trust). The institution has been started teaching activities from 2009-10. Threre is adeguate accomodation of teaching Ayurveda in the Institution. The Institution provides doctorate degree of B.A.M.S in Ayurveda. Health and family walefare ministry of Indian government, New Delhi, has consented and alloted 50 seats for institutiton in B.A.M.S degree. Now, the management body of Institution is trying hard to encrease 100 seats for admission. Divya Yog Mandir (Trust) has built an elegant building for the institution which is quite enough for 100 students. The institutiton has appointed learned professors. There is the best atmosphere, for teaching activities in the Institution.

Patanjali Ayurved University

Our Activities- A rare Vision

Teaching yoga, pranayama, spirituality, good health, elevation of personal and national character through the medium of Yoga Science Camps.

- More than 1000 residential and non-residential yoga Science Camp have been Organized from the year 1992 to may 2010 under the holy guidence of yogarishi swame Ramdevji Maharaj.
- In the Yoga Science Camps organized in the holy presence of Yogarishi Swami Ramdevji Maharaj till now

2.5 crore persons directly and about 100 crore persons have been indirectly benefited mentally, physically and spiritually.

- In the camps special emphasis is laid on making blood - donation, tree - plantation, swadeshi, cleanliness and patriotism a part of life.
- Yoga camps are organiged to popularize yoga among Forces, Para-military Force, Administration School, College and Corporate World.
- A Yoga Science Camp was organized for the first time in Rashtrapati Bhawan by any yogi.

Swami Ramdevji Maharaj teaching Yoga to thousands of participants in the Yoga Camp

Distinguished personalities of the world associated with Yoga His/Her Excellency the Presidents (former/ present) of India, Vice - President, Prime Minister, Governors and Chief Minister of several states, the topmost Judges of the Judiciary, enlightened bureaucrats, leading personalities in the world of art and culture, enlightened media persons, renowned personalities in the field of commerce and industry, officers of the Forces and Para - military Forces, many enlightened persons holding seats of power, Nobel Laureate Harry Kroto, UK Health Minister Ms Patricia Hewitt - so many distinguished personalities of the world have benefited from yoga on meeting Swamiji.

International Yoga Science Camps Yoga Science Camps were successfully organized for the first time outside India in July 2006 in UK.Till now, several Yoga Science Camps have been successfully organised in UK, USA, Japan, Canada, Dubai, Uganda, Kenya, Tanzania, etc. and Yoga has received wide recognition abroad.

Clinical Control Trials/Yoga Research With a view to testing yoga on scientific criteria, after clinical control trials in challenging Yoga Science Camps miraculous results were seen in the treatment of various diseases through Yoga/pranayama.

Good Health and character Building Movement through the medium of Patanjali Yog Samiti.

- A compaign for building up a healthy, clean, affluent and cultured Bharat and a movement for building up personal and national character are afoot in about 600 districts all over the country through the medium of 15 organization of Bharat Svabhiman (Trust) and 600 Patanjali Yog Samitis. More than1.25 lakh yoga instructors of Patanjali Yog Samiti at Centre, State, Division, District and Tehsil levels in Bharat are teaching yoga in public places, like parks, dharmashalas, temples, mosques, schools, colleges, universities, jails, corporate world.
- Three thousand yoga teachers of Patanjali Yog Samiti in UK, USA, Canada, Dubai, East Africa and South Africa and more than 5000 yoga teachers in Nepal are devoted day and night to teaching yoga.

All the pictures are related to Distinguished personalities of the world associated with yoga

Sh. A.P.J. Abdul Kalam, the then President of India, in conversation with Swamiji at Patanjali Yogpeeth.

UK Health Minister, Ms Patricia Hewitt seeking information on Pranayama from Swamiji

Swami ji teaching Yoga in the UK House of Commons

The clarien call of Swami ji Maharaj for Removal of Poverty under the STAND UP programme of U.N.O. in new York

- More than fifty thousand yoga classes are conducted daily by yoga teachers in India.
- The mission of building up a Bharat of Good Health and a Bharat of Good Character by preparing one yoga teacher for each of the 6,38,365 villages is in full swing. We resolve to make the whole Bharat yoga - practising by the end of the year 2009.

Yogarshi Swami Ramdev ji Maharaj & Acharya Balkrishan ji Maharaj with Her Excellency President Smt. Pratibha Devisingh Patil in Rashtrapati Bhavan

Yoga Teaching through TV, other electronic mediums (DVD, VCD, MP-3) and print Media

More than a hundred million people all over the world are being benefited indirectly from the yoga science of Swamiji thruogh various TV channels, other electronic medium (DVD, VCD, etc) and print media. Crores of people are being benefited by the yoga-related progarammes of yogarsi Swami Ramdevji Maharaj on different TV channels.

Search for Astavarga plants- A new dimention to the field of Ayurveda

- Astavarga comprises riddhi, vrddhi, meda, mahameda, kakoli, ksira kakoli, jivaka and rsabhaka medicinal plants until the efforts made by the Trust, astavarga was deemed to comprise only vrddhi, meda, kakoli and jivaka plants.
- Under the guidance of Acharya Balkrishnaji the nearly extinct riddhi, mahameda, ksira kakoli and rsabhaka plants were discovered, which is a new dimension to the field of Ayurveda.

Acharya Balkrishana ji Maharaj, General secretary of the Trust in a camp organised by Patanjali Yogpeeth for the assistance to victims of Bihar floods

Active Participation in Disaster Management

- Provided out and out assistance to persons affected by the Tsunami disaster of December 2004, and an aid of 50 lakh rupees was given to help the victims as a contribution from this institute.
- Patanjali Yogpeth emerged as the biggest NGO in the world to provide aid and relief to the victims of the most calamitous floods of the century in Bihar.
- Flood relief and assistance work was undertaken at more than 50 places in the flood ravaged districts where free food and clothing were distributed to lakhs of people daily.

Active Participation in Social Work

- Provision of food, clothing, etc. for orphans and lepers.
- Assistance in the marriage of orphan and poor girls.
- Stipend to talented boys / girls.

Honouring the Martys of Mumbai

- Patanjali Yogpeeth honoured in public in Delhi the family member of martyrs who laid down their lives in the most dastardly attack on our country in the post - independence history of Bharat.
- Rs.5,00,000/-were given to honour each martyr family.

Tributes paid by Swamiji in New Delhi to the martyrs of Mumbai Attack; and martyrs families were honoured.

Mother Ganga declared our national heritage

Consquent upon the rallying call and efforts of 'Ganga Raksha Manch' under the convenorship of Yogarishi Swami Ramdevji under the aegis of Patanjali Yogpeeth, the Central Government declared 'Man Ganga' the epitome of Indian culture, as our national heritage.

Research and Trainings

Highly educated physicians, researchers, scientists having Ph.D. degrees in Yoga, Botany, Ayurveda, Microbiology, Bio Technology have been working in different departments of Patanjali Yogpeeth, the mother institution of University of Patanjali. Over 10 researchers have been pursuing their Ph.D. degree in Yoga, Ayurveda, Chemistry, Oriental studies, Psychology and Microbiology. The institution has also sponsored its employees & volunteers for seeking higher education & training in renowned Universities & institutions. Various employees have derived its benefits. Higher research of international repute on different subjects in different departments of University of Patanjali is in progress, resulting our research papers have been got published in National & International Generals.

(A) Research and Trainings:

Department of Yog Research and development; Department of Ayurved Research and Development; Department of Medicinal Plants and Agricultural Investigation and Department of Philosophy and publications have made 15, 35, 10 and 2 research publications respectively. 20 research papers are under publication. 15 Innovative and patent researches made by department of Ayurved research and development and Patanjali Ayurved Limited relating to Ayurved, cow urine, and formulation process(Ghan Satwa Nirman) have been filed. Three papers out of them have been published. Patanjali Yogpeeth (PYP) has been striving for research on Astvarga and life rejuvenating medicinal plants and elementary success met in the search of Astvarga plants and identification of rejuvenating plants is exciting to further the allied researches. Institution has been working hard for scientific validation and standardization of life rejuvenating plants. Well equipped R and D on Yog and Ayurved have been providing free and subsequent trainings for B. Pharma, M. Sc, M.D and M. Pharma -students from Banaras Hindu Vishwavidyalaya, Indian Institute of Technology, Forest Research Institutions and other renowned universities in and around India. Similarly, Department of Medicinal Plants and Research organizes subsequent trainings for concerned students and farmers to provide updated technological and vocational knowledge. Himachal, Uttarakhand, Chhattisgarh and other state governments keep sending their scientists and farmers for the purpose of aforesaid trainings.

(B) Medicinal Plant Encyclopaedia:

An unprecedented and unique Encyclopaedia of Medicinal Plants with there pictures is being compiled containing a detailed information on the uses of about five thousand medicinal plants being used by almost all the countries of the world and also containing analyses based on modern science, which will prove to be a blessing to the world of Ayurveda.

(C) Arsha Nighantu :

Usage of medicinal plants with pictures described in classical texts of Ayurveda has been compiled in one place. This manuscript will prove to be very vital in the tradition of Ayurveda.

(D) Vocational and Practical Trainings:

Divya Pharmacy, Patanjali Ayurved Limited and Patanjali Food and Herbal Park have been established to manufacture and formulate high quality Ayurvedic medicines by using integrated approach of ancient and modern techniques and aid teaching-learning at University of Patanjali(PU). These manufacturing units are also serving as training centers for students of Ayurved, Agriculture and other allied vocational educations. Researchers, students, and professors from other institutions keep visiting these exemplary units and get benefitted at large.

(E) Collaboration with other Research Institutions and Universities:

Patanjali Yogpeeth has collaborated with other renowned national and international institutions like National Malaria Research Institution, Chaudhary Charansingh University, Meerut; Dev SanskritiVishwavidyalaya, Haridwar; B. E. G and C, Roorkee; Indian Institute of Technology, Roorkee; Central Council for Research on Yoga and Naturopathy, Social Research Foundation, Nepal; and Gurukul Kangri Vishwavidyalay, Haridwar etc. to conduct diverse research projects.

(F) Subsequent Refresher Trainings for Doctors and Scientists:

The institution has been organizing subsequent refresher trainings for Ayurvedic doctors and has trained more than 5000 Ayurvedic doctors and students to develop them as competent consultants of hospitals and health centers being run by different states of India and abroad. More than 1000 well trained doctors have been serving at Chikitsalayas in and around India on behalf of PYP.

Thus different departments and units of PYP are fully dedicating on quality-teaching, training, research and development at PU.

PATANJALI YOGPEETH
&
BHARAT SWABHIMAN – THE PATH

An Outlook On Life

Surrender yourself into the hands of God while observing complete restraint on your body senses and mind. Whatever then happens in your life shall be auspicious.... there shall be spontaneous attainment of success, accomplishment and Samādhi in your life.

Work Philosophy

The objective of our life is to believe in the Supremacy of the power of Guru and the power of God to worship the Nation-deity through disciplined hardwork, and to discharge our righteous actions and duties with complete dedication, competence unsparing endeavour and enterprise (aggressiveness). Always staying calm and devoid of an arrogance, by accepting that the knowledge, prosperity, success, accomplishment, kingdom, affluence, glory - all these achievements of our life are bye the grace of Guru and God, this is our work philosophy.

The Five Vows

1. God has choosen me for self redemption and for welfare of the world.
2. Life has got before it a very sublime goal of service to the nation and service of mankind.
3. I will never assess myself disparagingly.
4. I will maintain a perennial flow of noble sentiments in my life.
5. I will live as a cautious and vigilant representative of my Guru, God and nation.

The Five Targets

1. 100% voting.
2. 100% nationalistic thinking.
3. 100% total boycott of foreign companies, and complete support to swadeshi.
4. 100% organization of patriots.
5. To make a healthy, prosperous and cultured Bharat by developing a 100% yoga - practicing Bharat.

The Seven Norms of Good Conduct

1. Vegetarianism
2. Addiction - free
3. Healthy
4. Competent
5. Dedicated
6. Non-political life
7. Commitment to devote at least two hours daily to yoga and national interest

The Seven Norms of Nationalism

1. Nationalism
2. Enterprise
3. Transparency
4. Foresight
5. Humanitarianism
6. Spiritualism
7. Humility

University of Patanjali
Patanjali Yogpeeth,
Maharishi Dayanand Gram, Delhi-Haridwar National Highway,
Bahadarabad, Haridwar-249402 (Uttarakhand)
Telephone : +91-1334-242526, 244107, 240008 **Fax:** +91-1334 -244805, 240664
E-Mail : uopyp2009@gmail.com, divyayoga@divyayoga.com **Website :** www.divyayoga.com